RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

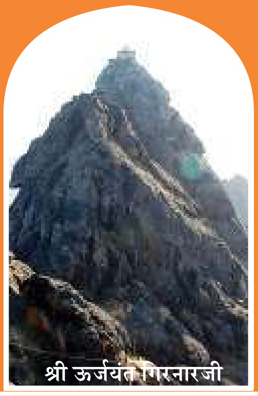

वर्ष : 15	अंक : 10	मुम्बई, जनवरी 2026	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 15	ISSUE : 10	MUMBAI, JANUARY 2026	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

श्री 1008 आदिनाथ भगवान, चांदखेड़ी, राजस्थान

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 15 अंक 10 जनवरी 2026

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

संपादकीय सलाहकार
डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2552

जैन वंदनार्थियों के लिए शिखरजी में लागू हो धार्मिक नियमावली 9

नए वर्ष 2026 का सच्चा स्वागत-मूल्यों की पुनर्स्थापना के साथ 11

विलियमबक्कम में 1000 वर्ष पुरानी प्राचीन 'आदि भगवान' की मूर्ति 19

इन्दौर संग्रहालय में पार्श्वनाथ की पुरातन प्रतिमाएँ 19

तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों के लिए मार्गदर्शन 21

आचार्य श्री कुंदकुंदाचार्य की जन्म स्थली 24

"जैन तीर्थवंदना" पत्रिका अब डिजिटल: सीधे आपके मोबाइल पर

माननीय सभी तीर्थप्रेमी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा प्रतिमाह प्रकाशित की जाने वाली **"जैन तीर्थवंदना"** पत्रिका **अप्रैल 2026 से डिजिटल माध्यम (मोबाइल/व्हाट्सऐप) से प्रेषित की जाएगी।** कृपया आप अपना **पूरा नाम एवं सही मोबाइल नंबर 15 मार्च 2026** तक कमेटी कार्यालय में अवश्य जाँच/सुधार करवा लें, ताकि प्रत्येक माह "जैन *तीर्थवंदना*" पत्रिका आपको **समय पर नियमित रूप से** प्राप्त होती रहे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
दूसरा तल, हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुंबई- ४००००४,
संपर्क सूत्र - 9833671770, 9109228683, 7078548210, 7217756871

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:
1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

हमारे तीर्थ-पूजा स्थल ही नहीं संस्कृति के केन्द्र भी

ईसवीं सन् विश्व का सर्वाधिक प्रचलित कैलेण्डर है। इसका नववर्ष 01 जनवरी से शुरू होता है। हिन्दू परम्परा में विक्रम संवत् गुड़ीपड़वा (चैत्र शुक्ल एकम) तथा जैन परम्परा में दीपावली से वीर निर्वाण संवत् प्रारम्भ होता है किन्तु अच्छे संकल्प एवं निर्णयों के लिए तो मात्र निमित्त चाहिए कभी भी संकल्प लेकर शुरूआत की जा सकती है अतः ईसवी नववर्ष भी एक निमित्त बन सकता है। वैसे भी हम बहुसंख्यक समाज के साथ मिलकर चलते हैं। यदि पूरा देश 01 जनवरी को नववर्ष मना रहा है तो हम भी इसको भी एक माध्यम बना सकते हैं।

हमारे सिद्धक्षेत्र, कल्याणक क्षेत्र एवं अन्य अनेक अतिशय क्षेत्र सैकड़ों/हजारों वर्षों से केवल उपासना स्थल ही नहीं संस्कृति के केन्द्र भी रहे हैं। क्षेत्र पर लगने वाले वार्षिक मेलों में समाज के अनेक निर्णय एवं परस्पर संवाद होता रहा है। क्षेत्र के जीर्णोद्धार एवं विकास की योजनाऐं भी तभी बनती थी। क्योंकि बहुसंख्यक भक्तों का आगमन उस समय ही होता था। लोग वार्षिक मेलों की प्रतीक्षा करते थे। धीरे-धीरे यह प्राथायें कम होती गयी एवं अब तीर्थ केवल पूजा स्थल बन कर रह गये हैं। कुछ क्षेत्रों के वार्षिक मेलों पर आज भी पुराना जैसा ही उत्साह एवं भक्तिमय वातावरण होता है जो अच्छी बात है। हमें इस प्रथा को जीवन्त रखना हैं।

पुनः देव-शास्त्र-गुरु के प्रति आस्थावान जैन समाज को तीर्थो के माध्यम से तीनों की सुरक्षा का दायित्व भी लेना चाहिए क्योंकि तीनों के बिना हमारा दिगम्बर जैन धर्म चल नहीं सकता।।

हर तीर्थ पर देव (तीर्थंकर) मूर्तियॉ तो विराजमान हैं ही, हमें पत्थरों पर सभी 24 तीर्थकरों की नामावली भी अंकित कराना चाहिए साथ में उनकी पहचान बताने वाले चिन्ह भी अंकित कराने चाहिए। जिससे भक्तगण आसानी से तीर्थंकरों को पहचान सके।

यदि किसी स्थान पर हस्तलिखित जिनवाणी है तो सर्वश्रेष्ठ है वरना:-

1 भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

2 जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर

3 दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर (मेरठ)

आदि किसी भी स्थान से मूल आगम ग्रंथ प्राप्त कर तीर्थ के जिनवाणी संग्रह/शास्त्र भंडार/सरस्वती भंडार में विराजमान करने चाहिए। इससे मूल हस्तिलिखित ग्रंथों का संरक्षण होगा, विनय एवं जागरूकता बढ़ेगी। युवा पीढ़ी में धर्म ग्रंथों को पढ़ने के प्रति रुचि जागृत होगी। मूल ग्रंथों का प्रकाशन करने वालो को प्रोत्साहन भी मिलेगा तथा विद्वानों को शोध की सुविधा भी।

हमारी पहचान पिच्छीधारी दिगम्बर गुरु एवं आर्यिका माताऐं हैं। इन्होंने हमारी संस्कृति को बचाकर रखा है। विपरीत काल में भी इन्हीं की बदौलत हमारी संस्कृति बची रही। पूज्य भट्टारक स्वामियों ने वस्त्र तो धारण किये किन्तु पिच्छी नहीं छोड़ी। यह उनकी आस्था एवं विश्वास का प्रतीक है। किन्तु आजकल घर-घर चौके लगाने की पद्धति कम होती जा रही है। अब श्रद्धालु मन्दिर के समीप बने संत सदन, अतिथि-भवन या धर्मशालाओं में आकर चौका लगाते हैं एवं संतों को आहार कराते हैं। किन्तु अब शनैः शनैः स्थितियॉ और भी गंभीर होती जा रही हैं। अब युवा पीढ़ी में इस कार्य में सक्षम गृहणियों की संख्या सतत घट रही है। बालिकाओं को तो कॅरियर एवं उच्चशिक्षा की चिन्ता हैं।

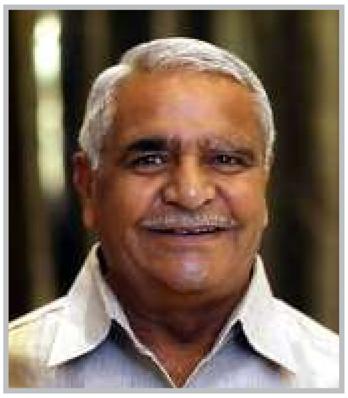

अ. भा. दि. जैन महिला संगठन, दि. जैन महासमिति-महिला प्रकोष्ठ, भा. दि. जैन महिला महासभा, जैसे महिला संगठनों एवं सोशल ग्रुप, पुलक जैन महिला जागृत मंच जैसे संगठन जिनमें महिलाऐं केन्द्रीय भूमिका में हैं उन्हें भी प्रशिक्षण शिविर लगा कर या जैसे भी हो महिलाओं को इस ओर प्रवृत्त करना होगा उनका भय मिटाना होगा।

देश के प्रभावी संतों की अगवानी एवं चौकों हेतु उमड़ने वाली भीड़ एक पक्ष है किन्तु उसका दूसरा पक्ष और भी भयानक है। कई शहरों में मुनियों/मुनिसंघों/आर्यिका माताओं को आहार हेतु चौके लगाने वाले नहीं मिलते। ऐसे में आशा के केन्द्र तीर्थ होते हैं। मैं तीर्थ के प्रबन्धकों से अपेक्षा करता हूं कि वे अपने-अपने तीर्थों पर चौकों की स्थायी व्यवस्था करें। जैसे पूजा करने वाले पुजारी जरूरी है वैसे ही संतों के आगमन के समय चौकों की व्यवस्था जरूरी है। कुछ निर्धन या निम्न मध्यमवर्गीय दि. जैन परिवारों की खोज कर उन्हें क्षेत्र पर नौकरी दे। पति नौकरी करे तो पत्नी भोजनषाला या चौके की व्यवस्था सम्हाले। मुनिसंघों की व्यवस्था करना क्षेत्रों की अनिवार्य आवश्यकता है। इसमें लगने वाला व्यय भी क्षेत्र कमेटी ही वहन करे। भक्तगण आहारदान देंगे किन्तु कमी होने पर यह क्षेत्र की कमेटी का ही दायित्व होना चाहिए। यह काम रुचिपूर्वक प्राथमिकता से किया जाना चाहिए।

नववर्ष 2026 में हम सब देव-शास्त्र-गुरु तीनों की आराधना/सेवा का संकल्प करें, शुरुआत आज से करें इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

णमोकार तीर्थ - एक अद्भुत सृजन

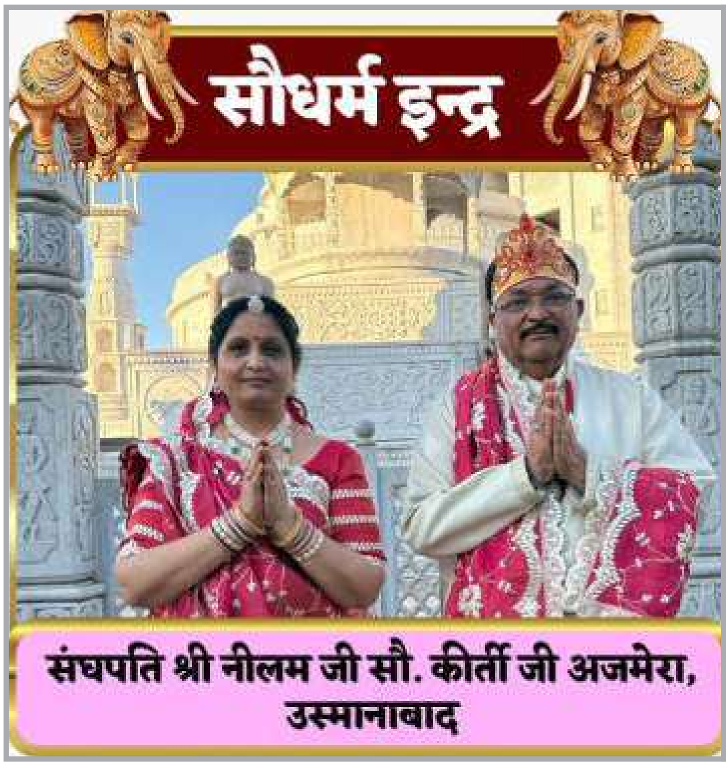

प्राचीन भारतीय श्रमण परंपरा, जैन संस्कृति, कला और विज्ञान की अद्वितीय प्रस्तुति है -णमोकार तीर्थः यह तीर्थ आर्ष आर्ष परंपरा, तप, संयम, साधना, आराधना और नवचेतना का सौंदर्यपूर्ण अविष्कार है। अहिंसा, अनेकांत और स्याद्वाद का विलक्षण संगम है तीर्थ! णमोकार

यह अलौकिक सृजन साकार हुआ है साक्षात तीर्थंकर भगवान के लघुनंदन, सारस्वताचार्य, प्रज्ञाश्रमण, ज्ञानयोगी परम पूज्य १०८ श्री देवनंदीजी गुरुदेव के पावन मार्गदर्शन से। एक दिव्य स्वप्न को धरातल पर मूर्त रूप मिला है णमोकार तीर्थ के रूप में।

क्यों "णमोकार तीर्थ ? णमोकार महामंत्र जैन धर्म का मूल, अनादिनिधन, चमत्कारिक व अपराजेय मंत्र है। इसकी प्रभावशीलता केवल जैनों तक सीमित नहीं, अपितु जैनेतर श्रद्धालुओं ने भी इसकी दिव्यता का अनुभव किया है। प्रत्येक जैन श्रद्धालु के हृदय में यह मंत्र निरंतर स्पंदित होता है। पाँच पदों और ३५ अक्षरों से युक्त यह प्राकृत भाषा का महामंत्र किसी व्यक्ति विशेष को नहीं, अपितु पंच परमेष्ठी को वंदन करता है। इसकी महिमा अनिर्वचनीय है।

गुरुदेव श्री देवनंदीजी की प्रेरणा से इस महामंत्र को जन-जन तक पहुँचाने हेतु, लोगों को पंच परमेष्ठी भगवान की आराधना तथा सच्चे धर्म के ज्ञान से लाभान्वित करने हेतु, लौकिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक उन्नयन के उद्देश्य से णमोकार तीर्थ की स्थापना हुई है।

स्थान एवं ऐतिहासिक महत्व

मुंबई-आगरा महामार्ग (क्रमांक ०३) पर, तालुका चांदवड, जिला नासिक (महाराष्ट्र) के मालसाणे ग्राम में, लगभग ३० एकड़ भूमि पर स्थित है यह तीर्थ। ऐसा माना जाता वाता है कि भगवान श्रीरामचंद्रजी ने अपने वनवास काल में में इस पावन स्थली पर विश्राम किया था, अतः इसे रामटेकड़ी के नाम से भी जाना जाता है। यह वही भूमि है जहाँ भगवान श्रीराम ने णमोकार मंत्र का जाप और आराधना की थी। यह भूमि आज तक कृषिकर्म से अछूती रही है, यहाँ न हल चला है न बीज बोया गया है। वर्षों से तपस्वियों की तपोभूमि रही यह जगह साक्षात देवभूमि है शांत, प्राकृतिक वातावरण में तप और शिक्षा के लिए अनुकूल।

विश्व की प्रथम पंच परमेष्ठी प्रतिमाएं

गुरुदेव की भावना अनुसार, पंच परमेष्ठी की भव्य प्रतिमाएं यहां विराजमान हैं: ४६ फीट ऊँची अरिहंत भगवान की प्रतिमा (अरिहंत के ४६ गुणों के आधार पर)

३६ फीट ऊँची सिद्ध भगवान

३६ फीट - आचार्य, २५ फीट उपाध्याय, और २८ फीट साधु

परमेष्ठी (पंच परमेष्ठियों के गुणों पर आधारित) दृश्य-श्रव्य झांकियां भी स्थापित हैं, जो जैन धर्म की गहराई को सहज रूप में प्रस्तुत करती हैं।

मंदिर परिसर में भगवान नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी की ३१ फीट ऊँची प्रतिमाएं विराजमान हैं। इसी के साथ भगवान आदिनाथ, भरत एवं बाहुबली की ३१ फीट उँची प्रतिमाएं विराजमान है। ध्यान मंदिर, सामायिक भवन तथा संलेखना भवन विशेष शांति का अनुभव कराते हैं।

गुरु मंदिर एवं वाचनालय

देव शास्त्र तथा गुरु हमारे परम आस्था का श्रद्धा स्थान है। तीन मंजिला भव्य गुरु मंदिर में १०० साधु-संतों की व्यवस्था संभव है। गुरु परंपरा का गौरव करते हुए वहाँ अनेक पूज्य गुरुओं की प्रतिमाएं विराजित हैं।

ग्रंथ भंडार एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त वाचन कक्ष आध्यात्मिक और बौद्धिक उन्नति के स्रोत हैं। गुरुदेव के जीवन पर आधारित चित्र प्रदर्शनी जनमानस को प्रेरणा देती है।

विशाल सभागृह एवं आवासीय सुविधाएं

परमेष्ठी मंडपम - २२,००० वर्ग फीट का भव्य हॉल

२०० वातानुकूलित कक्ष, ४ भव्य बंगले

यात्रियों के लिए धर्मशाला की सुविधाएं

समवशरण मंदिर - अद्वितीय सृजन

जैन संस्कृति में समवशरण वह दिव्य सभा है, जहाँ तीर्थंकर भगवान समवेत उपदेश देते हैं। णमोकार तीर्थ पर बना यह समवशरण विश्व का सबसे ऊँचा, १०८ फीट ऊँचा संगमरमर का मंदिर है।

यहाँ ८ भूमियाँ, २४ जिनालय, ४ मानस्तंभ तथा ३२ फीट ऊँची चंद्रप्रभु भगवान की मनोहारी प्रतिमा, अष्ट प्रातिहार्य, सोलह स्वप्न, २४ तीर्थकर, १६ विद्या देवियाँ, महामृत्युंजयी यंत्र, यक्ष-यक्षी, श्रुतस्कन्ध यंत्र एवं अपने संपूर्ण परिकर से सहित विराजमान है। अत्याधुनिक ध्वनि-प्रकाश संयोजन और विजुअल इफेक्ट्स के माध्यम से समवशरण स्वयं प्रकाशित होकर बोलने लगता है।

आर्थिक और सामाजिक प्रतिबद्धता

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा प्रतिपादित आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना में तीर्थक्षेत्र की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। णमोकार तीर्थः

* पर्यटन विकास
* रोजगार निर्माण
* परिसर विकास
* नई अर्थव्यवस्था का निर्माण

संस्कृति संरक्षण

राष्ट्रीय प्रतीक इन सभी बिंदुओं पर णमोकार तीर्थ खरा है।

णमोकार नॉलेज सिटी – ज्ञानग्राम

"पढ़ेगा समाज, तो बढ़ेगा समाज" को ध्यान में रखते हुए ७ एकड़ भूमि पर णमोकार नॉलेज सिटी का निर्माण प्रस्तावित है, जिसमें केजी से पीजी तक शिक्षा प्राप्त हो सकेगी।, स्कूल कॉलेज तथा विश्वविद्यालय भी शुरू करने का इरादा है। इंजीनियरिंग मेडिकल कॉलेज के अलावा आईटीआई, पंडित प्रशिक्षण केंद्र, महिला प्रशिक्षण केंद्र, निसर्गोपचार केंद्र, गुरुकुल योजना आदि आदि योजनाएं हैं।

शिक्षित समाज प्रगति पथ पर अग्रेसर होता है। उच्च शिक्षित समाज ही दुनिया को उन्नति का मार्ग दिखलाता हैं। ऐसा उन्नत समाज विश्व में हमारे भारत देश को महासत्ता बनाने का सामर्थ्य रखता है। अध्यात्म की नीव लौकिक शिक्षाको मजबूत बनाती है। ऐसे छात्रों का SQ spiritual quotient (अध्यात्मिक गुणांक) अच्छा हो सकता है। इस उद्देश्य से छात्रों के लिए गुरुकुल योजना भी विचाराधीन है। यहां से सभ्य, सुसंस्कृत, शांत, सहिष्णु पीढ़ी तैयार होगी। हमारा प्रिय भारत देश विश्व वंदनीय महागुरु बनेगा।

सामाजिक सेवा के उपक्रम

व्यसन मुक्ति केंद्र

चलता-फिरता अस्पताल

पशु चिकित्सालय

यह सब गुरुदेव की वात्सल्य दृष्टि का परिणाम है।

पंचकल्याणक महोत्सव

पाषाण से बनी प्रतिमा को पूज्य बनाने की प्रक्रिया अर्थात प्रतिमाओं में प्राण प्रतिष्ठा करने की प्रक्रिया है पंचकल्याणक । क्षेत्र इतना भव्य है तो पंचकल्याणक महोत्सव भी भव्य ही होगा इसमें कोई आश्चर्य नहीं।

६ फरवरी से १३ फरवरी २०२६ तक अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया है। अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणकप्रतिष्ठा महोत्सव तथा उसके पश्चात महामस्तकाभिषेक महोत्सव सुचारू रूप से संपन्न करने की जिम्मेदारी, णमोकार तीर्थ ट्रस्ट मंडल, परम आदरणीय बालब्रम्हचारी वैशाली दीदी संघस्थ, गौरव अध्यक्ष श्री अजयजी संचेती नागपूर, गौरवाध्यक्ष एवं परम संरक्षिका श्रीमती सरिता महेन्द्रकुमार जैन चैन्नई, परम संरक्षक श्रीमान आदरणीय प्रफुल्लभाई पटेल गोंदिया, परम संरक्षक एवं राष्ट्रीय मंत्री श्री राजेन्द्रजी जैन पांडया (पूर्व आमदार) गोंदिया, णमोकार तीर्थ के अध्यक्ष एवं महोत्सव के मुख्य संयोजक श्री निलमजी अजमेरा, अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री एवं अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक महोत्सव के अध्यक्ष श्री संतोषजी पेंढारी नागपूर, महोत्सव के महामंत्री श्री कमलजी ठोल्या चैन्नई, महोत्सव के कोषाध्यक्ष श्री दिनेशजी सेठी चेन्नई, श्री भुषणजी कासलीवाल चांदवड, श्री सुमेरजी काले, श्री पवन पाटणी, श्री विजय लोहाडे, डॉ. अतुल जैन, पारस लोहाडे, अनिल जमगे, बाबुभाई गांधी, संतोष काला, प्रकाश सेठी, फुलचंदजी जैन, महावीर गंगवाल, वर्धमान पांडे, संजय कासलीवाल, ललित पाटणी, विनोद लोहाडे, रविकुमार पहाडे, रूपेश जैन संगितकार टिकमगड, मिहिर गांधी (अध्यक्ष, महाराष्ट्र अंचल), संतोष घड़ी सागर, नविन जैन मालेगांव, आर. आर. पहाडे, राकेश पाटणी, सतिश पेंढारी एवं समस्त देवनंदिजी गुरुभक्त परिवार, अनेक विभागों के चेअरमन, के समर्थ कंधों पर है। प्रस्तुत महोत्सव में गणाधिपति गणधराचार्य परमपूज्य १०८ श्री कुंथुसागर महाराजीका मंगल आशीर्वाद तथा सान्निध्य प्राप्त होगा। परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण सर्वोदयी राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य श्री देवनंदीजी गुरुदेव के निर्देशन तथा उनके प्रखर प्रभावी शिष्य मुनिश्री अमोघ कीर्ति जी एवं मुनिश्री अमर कीर्ति जी के मार्गदर्शन में समस्त मांगलिक कार्य संपन्न होंगे।

इस कार्यक्रम के लिए १०० एकड़ भूमि पर भव्य 'पंच कल्याणकनगर' बनेगा। एक लाख स्केअर फीट के दो विशाल मंडप रहेंगे। ४०० से भी अधिक साधुओं का मंगल सानिध्य प्राप्त होगा। ३००० से भी अधिक जिन प्रतिमाओंका पंचकल्याणक संपन्न होने जा रहा है। देश विदेश से १० लाख सेभी ज्यादा श्रावक श्राविका उपस्थित रहने की संभावना है। उनकी सुविधा के लिए ३०० सूट तथा ७०० अस्थाई कमरे बनाने की योजना है। इसके अलावा डॉरमेट्रीज की भी व्यवस्था रहेगी। महामस्तकाभिषेक महोत्सव भी इसके पश्चात भव्य रूप में संपन्न होगा।

प्रतिदिन १ लाख श्रावक दर्शन हेतु पधारेंगे, ऐसी अपेक्षा है। आपसे अनुरोध है की ६ फरवरी से १३ फरवरी २०२६ और उसके पश्चात महामस्तकाभिषेक महोत्सव में शामिल होकर णमोकार तीर्थ दर्शन से, साधु समागम से अपना जीवन सफल करें। आप सभी सादर आमंत्रित हैं। शब्दांकन सौ पूनम अतुल खेड़कर।

श्री संतोष जैन (पेंढारी)

अध्यक्ष - अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव

दि. ०६ फरवरी २०२६ से २५ फरवरी २०२६ तक

णमोकार अद्वितीय है

जैन धर्म का सर्वप्रमुख, सर्वमान्य अपराजित, मंत्रराज णमोकार मंत्र है तथा जैन धर्म का सर्वाधिक लोकप्रिय, चमत्कारी स्तोत्र भक्तामर स्तोत्र है। भक्तामर के तो स्वतंत्र तीर्थ भी है। किन्तु णमोकार का नहीं था।

भक्तामर के रचयिता आचार्य मानतुंग के नाम पर मानतुंगगिरि तीर्थ है। किन्तु णमोकार के पंच परमेष्ठियों की आराधना का कोई तीर्थ नहीं था। परम पूज्य, प्रज्ञाश्रमण आचार्य श्री देवनन्दि जी महाराज ने महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिले में आगरा-मुम्बई राष्ट्रीय राजमार्ग पर चांदवड़ के समीप णमोकार तीर्थ का निर्माण कराया है। पूज्य आचार्य श्री की पावन, प्रशस्त प्रेरणा से प्रज्ञाश्रमण दिगम्बर जैनाचार्य देवनन्दि ट्रस्ट के अन्तर्गत इसका निर्माण किया जा रहा है। जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आगामी 06-13 फरवरी 26 के महज लगभग 200 संतों के पावन सान्निध्य में सम्पन्न होगी। यहाँ बना समवसरण विश्व में अद्वितीय है।

समवसरण में मूलनायक भ. चन्द्रप्रभ की मूर्ति की विशेषताओं, उनकी विशालता एवं सुन्दरता को देखकर मंत्रमुग्ध हुए बिना कोई रह नही सकता। श्वेत संगमरमर से बना 108 फीट ऊँचा समवसरण विश्व में अद्वितीय तो है ही इसमें किया गया तकनीकी संयोजन, इलेक्ट्रानिकी का उपयोग निश्चयेन सम्पूर्ण विश्व के पर्यटकों को तो आकर्षित करेगा ही हमारे अपने युवाओं में भी धर्म के प्रति समर्पण एवं आस्था को वृद्धिंगत करेगा।

पूज्य आचार्य श्री से अपनी णमोकार तीर्थ यात्रा में मैंने जब णमोकार तीर्थ की पृष्ठभूमि बताने का अनुरोध किया तो उन्होनें बताया कि 2012 में पूज्य गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर गुरुदेव ने मुझे स्वतंत्र रूप से तीर्थ विकसित करने की प्रेरणा दी। इस प्रेरणा के बाद मेरे भक्तों ने पूना, छ.संभाजी नगर (औरंगाबाद) आदि अनेक स्थानों पर भूमि देखी। 99 करोड़ मुनिराजों की मोक्ष स्थली मांगीतुंगी जी एवं 9 करोड़ मुनिराजों की मोक्ष स्थली गजपंथा जी के मध्य का यह क्षेत्र करोड़ों मुनियों की साधना स्थली रहा होगा। शायद मर्यादापुरुषोत्तम भगवान राम का भी प्रवास यहाँ रहा होगा क्योंकि यह टेकरीनुमा 27 एकड़ का भूखण्ड राम टेकरी के नाम से माना जाता रहा। भूमि का क्रय करने के बाद हमने इसे समतल कराया कई स्थानों पर 16 फुट तक का भराव कराना पड़ा तो कई स्थलों पर पहाड़ी की कटाई करनी पड़ी। सुयोग से इस स्थल पर पानी का भी अच्छा स्रोत मिल गया। वरना सहयाद्रि पर्वत श्रंखला की पत्थरों की इस भूमि पर पानी का अभाव रहा है। भूमि के पूर्व मालिकों को भी जल संकट का सामना करना पड़ा था। इस भूमि पर असीम शांति का अनुभव होता है। भूमि सौम्य प्रकृति की है।

श्रेष्ठ कार्यो हेतु ईश्वरीय शक्तियाँ भी सहभागी बन जाती है। इस कारण से हमारी बोरिंग में खुब पानी है। णमोकार मंत्र में पंच परमेष्ठियों की आराधना तो सभी करते हैं। किन्तु उनकी मूर्तियॉ एक साथ प्रमुखता से कहीं नहीं हैं। फलतः हमने यहाँ अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी की खड़गासन प्रतिमाऐं स्थापित कराई है। इतनी विशाल मूर्तियॉ से क्षेत्र की आभा अगुणित हो रही है।

क्षेत्र पर अनेक योजनायें आकल्पित हैं इनकी सूची निम्नवत् है। अधिकांश कार्य हो चुके है शेष गतिमान है।

- ☐ जैन संस्कृति एवं सिद्धान्तों का एनीमेशन, प्रकाश, ध्वनि एवं संगीत के माध्यम से विश्व में प्रथम बार परिचय।
- ☐ आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से साकार होगा बोलता हुआ समवशरण

निर्माणाधीन समवषरण की भव्य प्रतिकृति

समवसरण में विराजित मूलनायक भगवान चन्द्रप्रभ

- ☐ व्यसन मुक्ति मन्दिर
- ☐ प्रायश्चित मन्दिर
- ☐ गुरु मन्दिर
- ☐ मोबाईल हास्पिटल का संचालन
- ☐ ध्यान मन्दिर
- ☐ पशुचिकित्सा केन्द्र
- ☐ समाधि मन्दिर इत्यादि की अद्भुत रचना

क्षेत्र पर दिव्य समवशरण की रचना अभूतपूर्व है। करोड़ों प्रश्नों के उत्तर यहाँ कम्प्यूटराइज्ड रूप में प्राप्त होंगे। मूलनायक भगवान चन्द्रप्रभ की प्रतिमा दिव्य लक्षणों से सुशोभित है। इसे पूर्णतः शास्त्रीय विधि से बनाया गया है। 27 एकड़ के विशाल भव्यतम परिसर में प्राचीनता एवं आधुनिकता का समावेश किया गया है।

संक्षिप्ततः यहाँ जैन समाज का अत्याधुनिक, अलौकिक तीर्थ विकसित हो रहा है। जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज सहित अनेक पूज्य दि. जैनाचार्यों, मुनियों, आर्यिका माताओं के सान्निध्य में सम्पन्न होगी।

मेरे विचार से प्रत्येक जैन श्रावक/श्राविका को जीवन में एक बार इस तीर्थ के दर्शन जरुर करने चाहिए। पंचकल्याणक के अवसर पर अनेक आचार्यों एवं संघों के दर्शन का अतिरिक्त लाभ मिलेगा। यह तीर्थ महाराष्ट्र के नासिक जिले में चांदवाड़ के समीप ए. बी. रोड़ पर स्थित है।

पंचपरमेष्ठी की प्रतिमाऐं

- ☐ विश्व मंगल णमोकार मंत्र तथा जैन विद्या का अनुसन्धान केन्द्र
- ☐ व्यक्ति एवं समाज विकास का आध्यात्मिक केन्द्र
- ☐ पंच परमेष्ठी का विशाल संकुल
- ☐ छात्रावास
- ☐ विशाल गार्डन
- ☐ सरस्वती मन्दिर
- ☐ विशाल सभागृह
- ☐ सुविधायुक्त धर्मशाला

ईसवीं नव वर्ष 2026 में सभी पुण्य का संचय करें, सब प्रकार से उन्नति हो, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

जैन वंदनार्थियों के लिए शिखरजी में लागू हो धार्मिक नियमावली

- निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

दिगंबर जैनधर्म का अनादिनिधन और सबसे बड़ा धर्मतीर्थ झारखण्ड राज्य के गिरडीह जिले में स्थित मधुबन में सम्मेदशिखर जी (पारसनाथ पर्वत) पर बीस तीर्थंकरों की साधना और मोक्षस्थली पर चरण-चिह्न स्थली है। भगवान महावीर स्वामी के प्रथम गणधर गौतमस्वामी भी यहीं से मोक्ष गए हैं। यहां से असंख्यात भव्य आत्माओं ने जीवन-मरण से मुक्ति पाई है। इसीलिये हम पूरे पर्वत का कण-कण पवित्र मानते हैं। परंपरा से दिगंबर जैनधर्म के अनुयायियों की भावना इस पवित्र सिद्ध तीर्थक्षेत्र की पवित्रता को सुरक्षित और संरक्षित बनाए रखने की रही है, अभी है और भविष्य में भी रहेगी।

सोमवार 5 अगस्त 2019 को भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना- 'पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय' नईदिल्ली, 2 अगस्त 2019 के अनुसार पारसनाथ पर्वत को वन्यजीव अभयारण्य में पर्यटन क्षेत्र घोषित कर दिया गया। जो झारखंड राज्य सरकार के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए राजपत्र में घोषित हुआ है। इस अधिसूचना को निरस्त करने के लिए पूरे देश में समाज के श्रद्धालुओं ने सड़कों पर उतर कर ऐतिहासिक जुलूस निकाल कर अभूतपूर्व एकता का परिचय देते हुए तीव्र विरोध जताया। केंद्र सरकार की अधिसूचना को जैनतीर्थ जैन समाज की पवित्रता और स्वतंत्र पहचान के लिए बहुत बड़ा खतरा बताया गया था। समाज की ओर से मांग की गई थी की सम्पूर्ण सम्मेदशिखरजी धार्मिक सिद्धक्षेत्र और मधुबन को मांस-मदिरा मुक्त धर्माटन-धर्मस्थल घोषित करने की मांग केंद्र और झारखंड राज्य सरकार से की थी। पशु हत्या का निषेध किया जाए। इसके अलावा समाज ने मांग की थी कि समाज के इस आस्था क्षेत्र में किसी प्रकार की माइनिंग न हो और पर्वतराज के वंदना मार्ग में सीआरपीएफ, स्कैनर, सीसीटीवी कैमरें सहित अलग-अलग स्थानों पर चेकपोस्ट, चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था की जाएं।

जैन समाज के द्वारा भारत सरकार की अधिसूचना का दिसंबर और जनवरी 2022 में राष्ट्रव्यापी तीव्र विरोध हुआ तो 05 जनवरी 2023 को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली की ओर से एल. खियांग्टे, आईएएस, अपर मुख्य सचिव , झारखण्ड सरकार, रांची को निर्देश भेज दिये गए। किंतु छः साल निकल जाने के बाद भी भारत की केंद्र सरकार ने अपनी राजपत्र में प्रकाशित अधिसूचना वापस नहीं ली है। इस संबंध में हेमंत सोरेन, मुख्यमंत्री, झारखंड ने 05 जनवरी 2023 को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के मंत्री श्री भूपेंद्र यादव के नाम लिखे पत्र में लिखा केन्द्र सरकार की अधिसूचना का. आ. 2795 दिनांक 02.08.2019 को निरस्त करने हेतु भारत सरकार द्वारा ही कार्यवाही की जा सकती है।

हमारा सर्वोच्च धर्मतीर्थ अजैन यात्रियों के लिए पर्यटन स्थल बना हुआ है। अजैन यात्री हमारे पारसनाथ पर्वत पर ,जहां चाहें वहां निर्बाध रूप से घूमते रहते हैं। दिसंबर और जनवरी महिनों में मकर सक्रांति के आसपास के दिनों में लाखों की संख्या में पहाड़ पर मौजमस्ती करते हुए घुमते हैं। ब्ल्यु टूथ स्पीकर से मोबाइल को जोड़ कर तेज आवाज में अधार्मिक फिल्मी गाने चलाते हैं। पारसनाथ टोंक के बाहर दिगंबर और श्वेतांबर समाज की ओर से लगभग बीस सुरक्षा गार्ड तैनात किये गये हैं। वे भी यात्रियों के आने और जाने की अलग-अलग व्यवस्था नहीं कर पा रहे हैं। इस कारण टोंक के अंदर पर्यटक जाते तो हैं किंतु कोई-कोई पर्यटक तो टोंक में भगवान के चरण चिह्न छू लेता है। हमारे

एक यात्री नें भगवान की जय बोली तो दूसरे अन्य अनेक यात्रियों ने जोर की आवाज में हर-हर महादेव बोल दिया। अंदर अकेला एक पूजारी उनकी जैन-अजैन पहचान नहीं कर पाता है। उसकी अपनी सीमा है। अन्य टोंकों के आसपास के स्थानों पर अधिकतर युवक पर्यटक चप्पल-जूते पहने रहते हैं। तम्बाखू, सिगरेट , गुटके और पाऊच का उपयोग करते हैं। लड़के और लड़कियां अपने फोटू की शैल्फी लेते हैं। मुसलमान समाज के पर्यटक बुर्का पहने भी देखे गये हैं। कुछ पर्यटक सन सेट व्यू के फोटू हमारा टोंकों पर खड़े होकर लेते हुए देखे गए हैं। कुछ पर्यटकों के मुंह से शराब की गंध आ रही थी। पूरे पहाड़ पर हर प्रकार का कचरा फैल रहा है। हमारे समाज के यात्री जो 20 और 25 दिसंबर को वंदना कपने पहाड़ पर गये थे। उन्होंने भी पहाड़ का हालत बताई है। हमारे पहाड़ पर दो-ट्रक के लगभग कचरा एकत्रित होता है। सफाई कराने में एक-दो महिने लग जाते हैं। अब तो गौतम गणधर टोंक के थोड़ा नीचे की ओर भी पानी-नाश्ते की बिक्री होने लगी है।

मतलब इतना है कि हमारा परम पवित्र तीर्थराज सम्मेदशिखर पर्वतराज की पवित्रता खण्डित होती जा रही है। पहाड़ पर हमारे आधे यात्री मोटर साइकल से जाने लगे हैं। पदयात्री कम होते जा रहे हैं। हजार -आठ सौ मोटर साइकल ऊपर जाती और आती है। उनसे पैदल यात्रा कठिन हो गई है। बाहरी पर्यटकों की अधार्मिक गतिविधियों को रोकने का आज किसी को अधिकार नहीं है। न उनका सामान चेक किया जा सकता है। पहाड़ का अतिशय घट रहा होगा। अभी एक जनवरी को शिखर जी यात्रा कर वापस आए व्यथित यात्री ने पूज्य निर्यापक श्रमण श्री सुधासागर जी महाराज से शिखर जी की की यात्रा का हाल बताते हुए जिज्ञासा-समाधान में पूछा तो पूज्य श्रीजी ने कहा क्या करें? परिस्थितियां कुछ ऐसी ही बनती जा रही है ? मैं क्या बोलूं ? हमारी सीमाएं हैं? अगर पहाड़ पर वंदना करने वाले जैन यात्रियों का ड्रेस कोड लागू कर दिया जाए। यात्री निवास से ही उन्हें पहचान-पत्र दिया जाए। पर्वतराज पर ऊपर जाने का समय निश्चित कर दिया जाए तो कुछ न कुछ सुधार हो सकेगा। यात्रियों की पहचान हो सकेगा। पिछले कई वर्षो से पूज्य मुनिश्री प्रमाणसागर जी का शंका-समाधान में कह रहे हैं कि आप समाज के लोग पहाड़ पर जाने-आने वालों के लिये नियमावली बनाकर मेरे पास आओ। मैं अन्य समाज के साथ चर्चा करके नियमावली पालन करने की व्यवस्था कर दूंगा।

सम्मेदशिखर धर्मक्षेत्र पहाड़ की धार्मिक पवित्रता स्थाई रूप से और प्रभावी ढंग से तब ही सुनिश्चित हो जाएगी, तब इसे पवित्र धार्मिक तीर्थाटन क्षेत्र घोषित करने के लिये भारत सरकार के पर्यटन मंत्री से सम्पर्क किया जाएगा। जैसा कि गुजरात के पालीताना धार्मिक क्षेत्र की धार्मिकता के लिए प्रावधान लागू हो चुका है। कोई मस्जिद में जाता है, तो उसे वहां की धार्मिक नियमों का पालन करना होता है। सिखधर्म के गुरुद्वारे में जाने के लिये पहले हाथ-पैर पानी से साफ करना होता है। जूते-चप्पल बाहर उतारना होते हैं। सिर को ढककर के प्रवेश किया जाता है। हम दिगंबर जैन समाज की ओर से भी अपने धार्मिक स्थलों की पवित्रता की सुरक्षा के लिये सब कुछ कर सकते हैं। जहां चाह है वहां राह मिल ही जाती है।

आर्यिका पूर्णमति माता जी से राष्ट्रपति द्रोपदी मूर्मू की भेंट

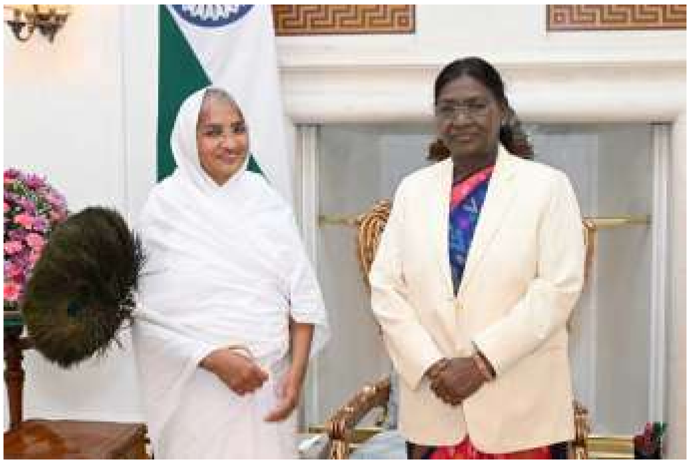

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की प्रमुख शिष्या विदुषी आर्यिका पूर्णमति माता जी ने 24 दिसंबर को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रोपदी मूर्मू से भेंट की। दिल्ली विधान सभाध्यक्ष बिजेंद्र गुप्ता ने माता जी की मुख्य द्वार पर अगवानी की। राष्ट्रपति जी ने माता जी का स्वागत कर भावभीनी विनयांजलि अर्पित की। दोनों ने धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और राष्ट्रहित के मुद्दों पर सौहार्द्रपूर्ण चर्चा की। कई अधिकारियों ने भी माता जी के दर्शन कर विनयांजलि अर्पित की। माता जी ने राष्ट्रपति भवन की विशालता और भव्यता देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और समस्त समाज और राष्ट्रहित की मंगल कामना के साथ शुभाशीष प्रदान किया। माताजी की आहारचर्या भी राष्ट्रपति भवन में ही हुई। आयोजन में वरुण जैन, अंकुश जैन, संजय जैन, आकांक्षा जैन, नेहा जैन और शुचि पाटनी का सहयोग रहा।

प्रस्तुतिः रमेश चंद्र जैन एडवोकेट,
नवभारत टाइम्स नई दिल्ली

नए वर्ष 2026 का सच्चा स्वागत-मूल्यों की पुनर्स्थापना के साथ

डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

नया वर्ष—एक नई तिथि, नया कैलेंडर और नई उम्मीदें। जैसे ही 31 दिसंबर की रात ढलती है, घड़ियाँ बारह बजाती हैं और हम एक नए वर्ष 2026 में प्रवेश कर जाते हैं। आतिशबाज़ी, शुभकामनाएँ और संकल्पों की बाढ़ के बीच एक प्रश्न चुपचाप खड़ा रहता है—क्या हमने केवल कैलेंडर बदला है, या जीवन की दिशा भी बदली है?

आज नए वर्ष का स्वागत अक्सर बाहरी चकाचौंध तक सीमित हो गया है। दिखावे की खुशियाँ, उपभोग का उन्माद और क्षणिक उल्लास—ये सब आधुनिक नववर्ष के प्रतीक बनते जा रहे हैं। परंतु भारतीय संस्कृति का नववर्ष-बोध इससे कहीं अधिक गहन, संयमित और मूल्यपरक रहा है। हमारे यहाँ नया वर्ष आत्मावलोकन, आत्मसंयम और आत्मपरिष्कार का अवसर माना गया है। कैलेंडर बदलना समय की प्रक्रिया है, संस्कृति बदलना चेतना का पतन।

भारतीय चिंतन परंपरा में समय को केवल भौतिक परिवर्तन नहीं माना गया, बल्कि उसे आत्मपरिष्कार का साधन समझा गया है। 'नव' का अर्थ नवीनता अवश्य है, परंतु वह नवीनता मूल्यहीन नहीं होती। वह नवीनता संस्कारों से सजी होती है, विवेक से संचालित होती है और उत्तरदायित्व से नियंत्रित रहती है। यही कारण है कि हमारे यहाँ नया वर्ष आत्मावलोकन, संयम और संकल्प का प्रतीक रहा है—न कि अंधानुकरण और उच्छृंखलता का।

आज जब वैश्वीकरण के प्रभाव में सांस्कृतिक एकरूपता थोपी जा रही है, तब अपनी परंपराओं की रक्षा करना पिछड़ापन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान का प्रश्न है। संस्कृति केवल पर्व-त्योहारों में नहीं बसती, वह हमारे व्यवहार, भाषा, भोजन, शिक्षा और जीवन-दृष्टि में प्रकट होती है। यदि हम समय के साथ चलने के नाम पर इन सबको त्याग दें, तो आने वाली पीढ़ियों के पास विरासत के नाम पर केवल खाली तिथियाँ बचेंगी।

समय आगे बढ़ता है, तिथियाँ बदलती हैं—यह स्वाभाविक है। किंतु संस्कृति वह स्थायी धरोहर है, जो पीढ़ियों को जोड़ती है। यदि हर नए वर्ष के साथ हम अपनी भाषा, परंपरा, आचार और नैतिक मूल्यों को भी बदल दें, तो विकास नहीं, विच्छेदन होगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम नए वर्ष को केवल उत्सव नहीं, उत्तरदायित्व के रूप में देखें। परिवार के प्रति संवेदनशीलता, समाज के प्रति सहभागिता और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता—यही हमारी संस्कृति के मूल तत्व हैं। यदि 2026 में प्रवेश करते समय हम हिंसा की जगह अहिंसा, उपभोग की जगह संयम और स्वार्थ की जगह सह-अस्तित्व को चुनें, तो यह नया वर्ष वास्तव में 'नया' कहलाएगा।

विशेषकर युवा पीढ़ी के लिए यह संदेश और भी महत्वपूर्ण है। आधुनिकता का अर्थ अपनी जड़ों से कटना नहीं, बल्कि उन्हें और गहराई से समझना है। तकनीक अपनाइए, पर संस्कार मत छोड़िए। वैश्विक बनिए, पर आत्मपहचान के साथ।

नया वर्ष 2026 हमसे यह अपेक्षा करता है कि हम बीते वर्ष की भूलों से सीखें और आने वाले समय के लिए मूल्य-आधारित संकल्प लें। केवल तारीख बदलने से जीवन नहीं बदलता, जीवन बदलता है दृष्टि बदलने से।

अतः इस नववर्ष पर संकल्प लें—कैलेंडर बदलेंगे, संस्कृति नहीं। समय के साथ चलेंगे, पर मूल्यों के साथ। यही नए वर्ष का सबसे सार्थक अभिनंदन होगा।

नई तिथि से जीवन नया नहीं हो जाता,
बिना संस्कार भविष्य उजला नहीं हो जाता।
कैलेंडर बदलिए, संस्कृति रहने दीजिए,
आने वाले कल को मूल्यों की गारंटी चाहिए।

मुंबई के गुलालवाड़ी मंदिर में स्थापित प्रथम गोलक से तीर्थ संरक्षण हेतु मिली नई दिशा

मुंबई में स्थापित **प्रथम गोलक** जो **200 वर्ष प्राचीन श्री पार्श्वनाथ स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर, देहरासर** में स्थापित है, जिससे प्राप्त सहयोग राशि से **तीर्थों के संरक्षण एवं विकास** की दिशा में एक सकारात्मक और सराहनीय पहल मुंबई महानगर से प्रारम्भ हुई है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125वें शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष महोत्सव हेतु प्रथम राष्ट्रीय बैठक ऐतिहासिक रूप से सम्पन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के **125वें (शतकोत्तर रजत) स्थापना वर्ष महोत्सव** को भव्य, दिव्य एवं ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से **मंगलवार, 16 दिसम्बर 2025** को अंतिम केवली **श्री जम्बूस्वामी की निर्वाण भूमि सिद्धक्षेत्र मथुरा चौरासी (उत्तर प्रदेश)** में प्रथम राष्ट्रीय बैठक का भव्य आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता कमेटी के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन (गाजियाबाद)** ने की तथा **श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.), आगरा** — अध्यक्ष, भारतीय जैन संघ, मथुरा — मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। बैठक में देशभर से राष्ट्रीय पदाधिकारी, अंचल अध्यक्ष, मंत्रीगण, तीर्थ प्रतिनिधि एवं विशेष आमंत्रित अतिथि बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए।

शुभारम्भ एवं संचालन

कार्यक्रम का शुभारम्भ **श्रमण संस्कृति विद्यालय** के विद्यार्थियों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। दीप प्रज्वलन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन, श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.), दिगम्बर जैन परिषद के अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद जैन, डॉ. राजीव जैन, श्री मनोज जैन एवं भारतीय जैन संघ, मथुरा के महामंत्री श्री ओमप्रकाश जैन द्वारा किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन **राष्ट्रीय मंत्री डॉ. जीवनप्रकाश जैन** ने किया।

स्वागत उद्बोधन

स्वागत उद्बोधन देते हुए **राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं भा.दि. जैन संघ, मथुरा के अध्यक्ष श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)** ने सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों, अंचल प्रतिनिधियों एवं अतिथियों का आत्मीय स्वागत किया। उन्होंने तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व अध्यक्षों एवं उनके परिवारों के योगदान को स्मरण करते हुए कहा कि 125वें स्थापना वर्ष पर कमेटी के

पूर्व अध्यक्षों एवं उनके परिवारों के योगदान को स्मरण करते हुए कृतज्ञता व्यक्त की तथा शतकोत्तर रजत महोत्सव के अवसर पर सभी पूर्व अध्यक्ष परिवारों एवं **51 संस्थापक सदस्यों के परिजनों** को सम्मानित करने का प्रस्ताव रखा, जिसे सभा ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया। उन्होंने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125 वर्ष केवल संगठन का उत्सव नहीं, बल्कि जैन तीर्थों की रक्षा, संरक्षण और विकास की अखंड साधना का प्रतीक हैं।

डॉक्यूमेंट्री प्रस्तुति

इस अवसर पर **श्रीमती मीनू जैन (गाजियाबाद)** द्वारा निर्मित *जैन संघ मथुरा* की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित डॉक्यूमेंट्री का प्रस्तुतीकरण किया गया। सभा ने उनकी सराहना करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय मंत्री डॉ. जीवनप्रकाश जैन ने शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के महत्व, उद्देश्यों एवं आगामी कार्ययोजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यह महोत्सव केवल उत्सव नहीं बल्कि तीर्थों के संरक्षण, संगठन सुदृढ़ीकरण एवं जन-जागरण का राष्ट्रीय अभियान होगा।

मोनोग्राम लोकार्पण

महोत्सव का आधिकारिक मोनोग्राम **श्री मनीष जैन वैद्य (जयपुर)** द्वारा तैयार किया गया, जिसका विधिवत लोकार्पण **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन** द्वारा किया गया।

विचार एवं वक्तव्य

महोत्सव समिति के चेयरमेन श्री जवाहरलाल जैन ने सभी से आह्वाहन किया कि यह एक बहुत बड़ा प्रयास होगा कि हम कमेटी के शतकोत्तर स्थापना के माध्यम से जन-जन तक पहुँचा सकें इसके लिए हमें सभी अंचलों के पदाधिकारियों की आवश्यकता है और हमें तीर्थक्षेत्र कमेटी को और अधिक सक्षम कर अपनी आने वाली पीढ़ी को सौंपना है।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अशोक जैन दोशी (मुंबई) ने कहा कि तीर्थों के संरक्षण हेतु आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिकाओं एवं साधु-संतों का आशीर्वाद अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने गोलक योजना, तीर्थ रक्षा कलश एवं अधिकाधिक मंदिरों को कमेटी से जोड़ने पर बल दिया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय जैन (अहमदाबाद) ने संगठन को जमीनी स्तर तक मजबूत करने, 125 वर्ष पुराने संविधान में समयानुकूल संशोधन, तीर्थ सर्वेक्षण, सोशल मीडिया प्रचार तथा जैन समाज की प्रतिभाओं को मंच देने की आवश्यकता बताई।

श्री आर.सी. जैन (आर्किटेक्ट, गाजियाबाद) ने सुझाव दिया कि

राष्ट्रीय आयोजनों में प्रतिष्ठित समाजसेवियों, बुद्धिजीवियों एवं प्रसिद्ध व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाए जिससे मीडिया कवरेज प्राप्त हो।

दिल्ली अंचल अध्यक्ष श्री प्रद्युमन जैन ने युवाओं को संगठन से जोड़ने और तीर्थक्षेत्र कमेटी को घर-घर पहुँचाने का आह्वान किया।

राष्ट्रीय मंत्री श्री जयकुमार जैन (कोटावाले) ने राजस्थान के तीर्थो का सम्मेलन आयोजित करने तथा पर्यटन, संस्कृति व अल्पसंख्यक मंत्रालय की योजनाओं का लाभ तीर्थो को दिलाने पर जोर दिया।

कर्नाटक अंचल अध्यक्ष श्री विनोद जैन बाकलीवाल ने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यों का पर्याप्त प्रचार नहीं हो पा रहा है। उन्होंने महिलाओं एवं युवाओं को आगे लाने तथा राष्ट्रीय पदाधिकारियों के तीर्थ भ्रमण पर बल दिया।

राष्ट्रीय मंत्री श्री हंसमुख जैन गांधी ने गोलक योजना की प्रगति की जानकारी देते हुए सभी अंचलों से पूर्ण सहयोग का आह्वान किया तथा प्रस्तावित राष्ट्रीय कार्यक्रमों को एलईडी स्क्रीन पर प्रस्तुत किया।

तीर्थ सर्वेक्षण समिति चेयरमेन श्री जैनेश जैन झांझरी ने युवाओं को जोड़ने, सोशल मीडिया सक्रियता तथा मध्यांचल के तीर्थों के सर्वेक्षण, ड्रोन फोटोग्राफी एवं दस्तावेजीकरण की जानकारी दी।

श्रीमती अपराजिता जैन (सांध्यमहालक्ष्मी) ने महिलाओं को संगठित कर वार्षिक सहयोग राशि से तीर्थों के संरक्षण में योगदान का सुझाव दिया।

श्री शरद जैन (सांध्यमहालक्ष्मी) ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व में पिछले दो वर्षों की उपलब्धियों का दृश्य प्रस्तुतीकरण किया तथा डिजिटल ऐप की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल ने साधु-संतों की भूमिका, प्रचार-प्रसार पर व्यय एवं जन-धन शक्ति के समुचित उपयोग पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि कमेटी आज सम्मेद शिखरजी, गिरनार जी, केसरिया जी, शिरपुर जी जैसे अनेक क्षेत्रों के केसेस को विविध न्यायालय मे लड़ रही है। और हमारे क्षेत्र को बचा रही है। आज इस तीर्थ क्षेत्र कमेटी को सक्षम करने की आवश्यकता है। हम देख रहे है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी ने लगातार आज तक अपना कार्य किया है।

दान घोषणाएँ

महोत्सव को भव्य बनाने हेतु **125 सदस्यों की आयोजक समिति** बनाने का प्रस्ताव रखा गया। **श्री राजेश जैन (पुष्पांजली)** द्वारा ₹11 लाख की घोषणा पर उन्हें विशेष सम्मान प्रदान किया गया। अनेक महानुभावों ने ₹1 लाख व उससे अधिक राशि देने की स्वीकृति दी।

अध्यक्षीय उद्बोधन-

अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन **ने शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष को संगठन के इतिहास का स्वर्णिम अवसर बताते हुए सभी से पूर्ण समर्पण एवं सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया तथा सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस प्रथम राष्ट्रीय बैठक में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अनेक राष्ट्रीय एवं अंचल स्तर के पदाधिकारी उपस्थित रहे, जिनमें प्रमुख रूप से** राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन (गाजियाबाद), राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.) आगरा, श्री विजय जैन

(अहमदाबाद) एवं श्री संजय पापड़ीवाल (औरंगाबाद), राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री अशोक जैन दोशी (मुंबई), राष्ट्रीय मंत्री श्री जयकुमार जैन (कोटावाले) लखनऊ, श्री हंसमुख जैन (इंदौर) एवं डॉ. जीवनप्रकाश जैन (हस्तिनापुर), स्थापना वर्ष महोत्सव समिति के चेयरमेन श्री जवाहरलाल जैन (सिकंदराबाद), तीर्थ सर्वेक्षण समिति के चेयरमेन श्री जैनेश जैन झांझरी (इंदौर), कर्नाटक अंचल अध्यक्ष श्री विनोद जैन बाकलीवाल (मैसूर), दिल्ली अंचल अध्यक्ष श्री प्रद्युमन जैन, पूर्वांचल मंत्री श्री प्रभात सेठी (गिरिडीह), राजस्थान अंचल मंत्री श्री मनीष जैन वैद्य (जयपुर) तथा श्री मथुरा चौरासी क्षेत्र के महामंत्री श्री ओमप्रकाश जैन (उत्तर प्रदेश) सम्मिलित रहे। इनके अतिरिक्त विशेष आमंत्रित अतिथियों के रूप में श्री आर.सी. जैन (गाजियाबाद), श्री सुशील जैन (दिल्ली), श्री जीवेन्द्र कुमार जैन (गाजियाबाद), श्री हेमचंद जैन (दिल्ली), श्री अनूपचंद जैन (एडवोकेट, फिरोजाबाद), श्री राजेश जैन (दिल्ली), श्री सचिन जैन, श्री अरुण जैन (कोशिकलर), श्री रमेश गर्ग जैन, श्री अरुण जैन (बंटी, कन्नौज), डॉ. सुनील जैन 'संचय' (ललितपुर), श्री अनिल जैन (दिल्ली), श्री बबन दत्तवाडे (कर्नाटक), श्रीमती मीना सेठी (गिरिडीह), श्री पारस जैन (गाजियाबाद), श्री प्रदीप जैन (पी.पी.), डॉ. राजीव जैन (आगरा), श्री मनोज कुमार जैन (आगरा), श्री सुभाष जैन (आगरा), श्री प्रमोद जैन, श्री शरद जैन एवं श्रीमती अपराजिता जैन (दिल्ली – सांध्यमहालक्ष्मी), श्री आदीश पी.डी. जैन (आगरा), श्री पियूष जैन (गाजियाबाद), श्री संजीव जैन एवं श्री योगेश जैन (मथुरा), जिनेन्द्र जैन शास्त्री, श्री प्रशांत जैन (जबलपुर), श्रीमती मीनू जैन (सिकंदराबाद), श्री नीरज जैन (दिल्ली), श्री पुनीत जैन (लाल मंदिर, दिल्ली), श्री कैलाश जैन, श्री कमल जैन (पलवल/दिल्ली), श्री संजय कुमार जैन एवं श्री अंशुल जैन (मथुरा), श्री रजनीश जैन, श्री प्रमोद जैन एवं श्री कवि जैन (साहिबाबाद), श्री महावीर प्रसाद जैन, श्री निर्भय कुमार जैन, श्री अशोक जैन (छाबड़ा), श्री सुबोध कुमार जैन, श्री संजीव जैन (हाथरस), श्री धर्मेन्द्र जैन, श्री सचिन जैन एवं श्री मनीष जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125वें शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष की गतिविधियाँ

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी गत 125 वर्षों से जैन तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के लिए निरंतर कार्यरत है। तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125 वर्ष पूर्ण होने के मंगल अवसर को महोत्सव रूप देने हेतु **"शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष"** समिति का गठन किया गया है, जिसके चेयरमेन **श्री जवाहरलाल जैन** हैं। इस समिति के माध्यम से **22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027** तक संपूर्ण भारतवर्ष में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन सभी 9 अंचलों के माध्यम से किया जाएगा। आयोजनों के सुचारु संचालन हेतु सभी अंचलों में "शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष" समिति के चेयरमेन की नियुक्ति की जा रही है।

इसी क्रम में सर्वप्रथम **श्री पुनीत जैन दरियागंज** को उनकी कार्यक्षमता, शैली एवं कर्मठता के कारण **दिल्ली प्रदेश अंचल** के "शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष" समिति के चेयरमेन पद हेतु चयनित किया गया।

आचार्य श्री 108 प्रणसागर महाराज जी के सान्निध्य में सिद्ध आराधना विधान के मध्य, अतिशय क्षेत्र **श्री दिगम्बर जैन लाल मंदिर** में **28 दिसम्बर 2025** को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में "शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष" समिति के चेयरमेन पद हेतु **श्री पुनीत जैन** को विधिवत दिल्ली प्रदेश (हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर) अंचल का शतकोत्तर

रजत वर्ष स्थापना समिति का अध्यक्ष, तीर्थक्षेत्र कमेटी के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन** एवं शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समिति के चेयरमेन **श्री जवाहरलाल जैन** द्वारा मनोनीत कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर "शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष" समिति के दिल्ली प्रदेश (हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर) अंचल कार्यालय का **अतिशय क्षेत्र श्री दिगम्बर जैन लाल मंदिर** में विधिवत उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री जम्बूप्रसाद जैन**, शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समिति के चेयरमेन **श्री जवाहरलाल जैन, श्री चक्रेश जैन, श्रीमती विजया जैन (बिजली वाले), श्री नीरज जैन दिगम्बर, श्री हेमचंद जैन, श्रीमती पूनम जैन (ऋषभ विहार), श्री जिनेन्द्र जैन, दूलचंद सेठ, श्री पुनीत जैन 'वीतराग', श्री पंकज जैन (प्रवक्ता, बीजेपी), श्री मनीष जैन (लाल मंदिर), श्रीमती कविता जैन, श्रीमती शोभा जैन, श्री शरद जैन (सांध्यमहालक्ष्मी), श्रीमती मीनू जैन, श्री पुनीत जैन, श्रीमती कुमुद जैन दिगम्बर** सहित अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष: तीर्थ रक्षा हेतु प्रदेशव्यापी आयोजनों की तैयारी

"शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष" समिति के चेयरमेन **श्री जवाहरलाल जैन** ने दिनांक **04–05 जनवरी 2026** को इन्दौर में मध्यांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष **श्री डी.के. जैन**, राष्ट्रीय मंत्री **श्री हंसमुख जैन गांधी** से विभिन्न कार्यक्रमों के संबंध में विस्तृत चर्चा की।

चर्चा के पश्चात यह निर्णय लिया गया कि "शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष" के अवसर पर समिति का ₹ **5/- मूल्य का डाक टिकट भारत सरकार द्वारा जारी** कराया जाएगा। इस हेतु **श्री गोपीचंद जी जैन** एवं

श्री स्वप्निल जैन (इन्दौर) को डाक टिकट संबंधी आवश्यक कार्यवाही का दायित्व सौंपा गया।

मध्यांचल के अध्यक्ष **श्री डी.के. जैन** ने अत्यंत उत्साह के साथ अंचल अंतर्गत "शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष" के सभी कार्यक्रमों को संपन्न कराने हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान की तथा निम्नानुसार रूपरेखा प्रस्तुत की—

कार्यक्रमों की रूपरेखा

प्रथम चरण

तीर्थ रक्षा संकल्प दिवस – 15 मार्च 2026

स्थान : इन्दौर, भोपाल, जबलपुर, सागर एवं ग्वालियर

द्वितीय चरण

तीर्थ रक्षा संकल्प दिवस – 03 अथवा 10 मई 2026

स्थान : धार, रायसेन, विदिशा, उज्जैन, मंदसौर-नीमच, गुना, अशोकनगर, भिंड, छतरपुर एवं टीकमगढ़

तृतीय चरण

तीर्थ रक्षा संकल्प दिवस – 02 अथवा 09 अगस्त 2026

स्थान : खरगोन, झाबुआ, कटनी, नरसिंहपुर, सिवनी, बालाघाट, छिंदवाड़ा, देवास, रतलाम, शिवपुरी, मुरैना एवं दमोह

दिनांक **05 जनवरी 2026** को दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री अशोक जी जैन बड़जात्या**, इन्दौर के कार्यालय में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के अध्यक्ष **श्री डी.के. जैन** के साथ तीर्थक्षेत्र कमेटी के उन्नयन एवं विकास के संबंध में विस्तृत विचार-विमर्श हुआ।

श्री अशोक जी जैन ने कहा कि हमें प्रदेश में स्थान-स्थान पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए तथा समाज को यह बताना चाहिए कि तीर्थक्षेत्र कमेटी क्या-क्या कार्य करती है। इससे तीर्थक्षेत्र कमेटी की एक सशक्त ब्रांड पहचान बनेगी तथा अधिक से अधिक समाजजन स्वयं ही संस्था से जुड़ेंगे, जिससे तीर्थक्षेत्र कमेटी की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ हो सकेगी।

उन्होंने अपने अमूल्य समय प्रदान कर तीर्थक्षेत्र कमेटी के उन्नयन हेतु जो मार्गदर्शन दिया, उसके लिए मध्यांचल अध्यक्ष श्री डी.के. जैन ने विशेष रूप से उनका आभार व्यक्त किया।

लगभग **4 घंटे** की चर्चा के पश्चात मध्यांचल अध्यक्ष **श्री डी.के. जैन** की सहमति से निम्नलिखित कार्यक्रम सुनिश्चित किए गए—

प्रथम चरण

तीर्थ रक्षा संकल्प दिवस – 15 मार्च 2026

स्थान : इन्दौर, भोपाल, जबलपुर, सागर एवं ग्वालियर

कार्यक्रम रूपरेखा

- विशाल सभा का आयोजन (स्थान निर्धारण किया जाएगा)
- समय : प्रातः 09:00 बजे से 10:30 बजे तक
- सान्निध्य : यदि कोई साधु-परमेष्ठी विराजमान हों तो उनका सान्निध्य
- मंगलाचरण : स्थानीय समाज की महिलाओं द्वारा
- दीप प्रज्ज्वलन : श्री सम्मेद शिखरजी की फोटो के समक्ष
- मुख्य अतिथि : तीर्थ संरक्षक की उपाधि प्रदान करना
- विशिष्ट अतिथि : तीर्थ विकास सहयोगी के रूप में सम्मान
- स्वागत उद्बोधन : अंचल अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारियों द्वारा
- कार्यक्रम की प्रस्तावना : किसी विद्वान द्वारा
- पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन : तीर्थों के संबंध में
- सामूहिक पाठ : निर्वाणकांड
- संकल्प पत्र भरवाना एवं व्यवस्था : उपस्थित प्रत्येक महिला एवं पुरुष से
- तीर्थ रक्षा संकल्प ज्योति : 108 तीर्थों के चित्रों के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं अर्घ्य अर्पण
- उद्बोधन : मुख्य अतिथि
- उद्बोधन : विशिष्ट अतिथि
- आरती : सामूहिक

प्राप्त किया जाएगा।

- आशीर्वचन : साधु-परमेष्ठियों / सभा अध्यक्ष द्वारा

प्रचार-प्रसार व्यवस्था

- कार्यक्रम से 1 सप्ताह पूर्व मंदिरों में होर्डिंग / फ्लैक्स बैनर लगवाना
- स्थानीय ग्रुपों में व्हाट्सऐप संदेश द्वारा सूचना
- मंदिर पदाधिकारियों को पत्र
- तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्यों को सूचना
- पारस चैनल के माध्यम से सूचना
- फोन कॉलिंग
- स्थानीय महिला मंडलों को सक्रिय करना

कार्यक्रम के उद्देश्य

- प्रत्येक दिगम्बर जैन मंदिर में तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक रखवाना
- प्रत्येक दिगम्बर जैन परिवार से कूपन के माध्यम से संकल्प पत्र भरवाना
- साधुओं के चातुर्मास के समय तीर्थ रक्षा कलश स्थापना हेतु प्रयास एवं वातावरण निर्माण
- तीर्थक्षेत्र कमेटी के अधिक से अधिक सदस्य बनाना
- अंचल के तीर्थों पर तीर्थयात्रा हेतु समाज को प्रोत्साहित करना

विशेष नोट

1. आयोजन के व्यय हेतु मुख्य एवं विशिष्ट अतिथियों से सहयोग प्राप्त किया जाएगा।
2. 108 तीर्थों के चित्रों के समक्ष तीर्थ संकल्प ज्योति (₹1100 प्रति ज्योति) से प्राप्त राशि आयोजन व्यवस्था में व्यय की जाएगी।
3. संकल्प पत्र एवं तीर्थों के फ्लैक्स बैनर शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समिति द्वारा उपलब्ध कराए जाएंगे।
4. संकल्प पत्र से प्राप्त राशि का 20% अंचल को तथा 80% शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समिति को दिया जाएगा।
5. जो भी नए सदस्य बनाए जाएंगे, उनकी सदस्यता राशि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के केंद्रीय कार्यालय को भेजी जाएगी।

द्वितीय चरण

तीर्थ रक्षा संकल्प दिवस – 03 अथवा 10 मई 2026

स्थान : धार, रायसेन, विदिशा, उज्जैन, मंदसौर-नीमच, गुना, अशोकनगर, भिंड, छतरपुर एवं टीकमगढ़

तृतीय चरण

तीर्थ रक्षा संकल्प दिवस – 02 अथवा 09 अगस्त 2026

स्थान : खरगोन, झाबुआ, कटनी, नरसिंहपुर, सिवनी, बालाघाट, छिंदवाड़ा, देवास, रतलाम, शिवपुरी, मुरैना एवं दमोह

जवाहरलाल जैन
चेयरमेन
शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समिति

विद्वानों की पूँजी सरस्वती है- आचार्य श्री विभवसागर

नपुर, दि. 5 जनवरी। जिनेन्द्र भगवान् द्वारा प्रतिपादित दिव्य वचनों को जिनशास्त्रों में सुरक्षित रखा जाता है उन्हें सरस्वती, श्रुत,शास्त्र या जिनवाणी कहते हैं। डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती द्वारा स्थापित जिन विद्या एवं प्राकृत शोध संस्थान के विशाल एवं सुव्यवस्थित पुस्तकालय को देखकर सुखद अनुभूति होती है। अब मैं जब यहाँ से विहार करूँगा तो अन्य स्थानों पर भी इस पुस्तकालय की मिसाल दूँगा कि कोई विद्वान् शास्त्रों का संरक्षण कैसे करता है? यह विचार परम पूज्य शब्दशिल्पी, सारस्वताचार्य श्री विभवसागर जी महाराज ने जैन हैप्पी स्कूल स्थित जैन विद्या एवं प्राकृत शोध संस्थान के विशाल पुस्तकालय को देखकर धर्मसभा में व्यक्त किये। प्रारंभ में आचार्य श्री एवं उनके समस्त संघ को पार्श्व ज्योति मंच की ओर से समाजसेवी धर्मचन्द पाटौदी, अध्यक्ष-राजेशचान्दमल जैन, कोषाध्यक्ष-विमलकुमार पाटनी, मुनिसेवा समिति संयोजक-पवन जैन ठोलिया, दिलीप पहाड़िया, भागचन्द गंगवाल ने बुरहानपुर से प्रकाशित डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती की इक्कीस पुस्तकों का सैट भेंट किया। संस्थान पधारने पर मुनिश्री का पाद प्रक्षालन किया गया। विशेषता यह रही कि उपस्थित सभी भक्तों ने एक-एक ग्रन्थ आचार्य श्री को भेंट किया। आचार्य, मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका संघ ने पुस्तकों को जीवनमूल्यों के संरक्षण का प्रतीक बताकर अतिशय प्रसन्नता व्यक्त की। श्रीमती इन्द्रा जैन, शोभा छावड़ा, शोभा पटवारी, डॉ. अश्विनी महाजन, ज्योति पवार, पूजा छत्रे, उषा सोनेवाल, विमल ठोलिया, संदीप ठोलिया, दिलीप कासलीवाल, पंकज कासलीवाल, विरेन्द्र जैन, संतोष जैन, आलोक पाटौदी आदि ने आचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। संचालन डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती ने किया।

विलियमबक्कम में 1000 वर्ष पुरानी प्राचीन 'आदि भगवान' की मूर्ति के लिए भव्य नए जिनालय का निर्माण

12 वर्षों के निरंतर प्रयासों के बाद प्राण-प्रतिष्ठा सम्पन्न

चेंगलपट्टू तमिलनाडु के विलियमबक्कम में 1000 वर्ष पुरानी प्राचीन 'आदि भगवान' की मूर्ति के लिए भव्य जिनालय का निर्माण पूरा हो गया। रविवार, 30 नवंबर को भारी तूफान की चेतावनी के बावजूद, मंदिर उद्घाटन, विमान कलश स्थापना तथा आदिनाथ भगवान की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा आगम विधि के अनुसार अत्यंत धूमधाम से सम्पन्न हुई।

कैसे मिली प्राचीन मूर्ति?- चेंगलपट्टू से 7 किमी दूर,चेंगलपट्टू–वालाजाबाद राजमार्ग के समीप स्थित विलियमबक्कम गाँव में यह मूर्ति 'थानथोन्द्री अम्मन' मंदिर के पास इमली के एक विशाल वृक्ष की जड़ों में जकड़ी हुई अवस्था में मिली थी। 'अहिंसा वॉक' (अहिंसा यात्रा) के सदस्य श्री जीवकुमार द्वारा वर्ष 2013 में इस प्राचीन मूर्ति की खोज की गई।

12 वर्षों का लंबा संघर्ष- मूर्ति को उचित स्थान पर स्थापित करने के लिए 'अहिंसा वॉक', जैन युवा मंच और स्थानीय उत्साही लोगों ने वर्षों तक प्रयास किया। 2017 में 'अहिंसा वॉक-44' के माध्यम से जनजागरण किया गया। इमली के वृक्ष की जड़ों से मूर्ति को निकालना अत्यंत कठिन कार्य था। प्रारंभ में इसे भजन मंदिर और बाद में एक वाहन शेड में सुरक्षित रखा गया। कई बार भूमि खोजने के प्रयास हुए, पर योजनाएँ आगे नहीं बढ़ सकीं।

पंचायत ने दी भूमि प्रयास हुए सफल- फरवरी 2025 में ग्राम प्रधान श्री एकाम्बरम, नाट्टामै श्री पंचाक्षरम और मुरुगन भक्त श्री मुरुगन के सहयोग से पंचायत ने एक आधिकारिक प्रस्ताव पारित करते हुए मंदिर निर्माण के लिए भूमि उपलब्ध कराई। इसके बाद भक्तों के दान से गर्भगृह, मुखमंडप और विमान (शिखर) सहित एक सुंदर व भव्य जैन मंदिर का निर्माण किया गया।

उद्घाटन और प्राण-प्रतिष्ठा- उद्घाटन समारोह में जिनालय पूजा, हवन और धार्मिक अनुष्ठान प्रसिद्ध विद्वान श्री सुरेश उपाध्याय (स्वर्गीय उपाध्याय श्री देवराज के शिष्य) द्वारा संपन्न कराए गए। गाँव के लोगों, भक्तों और यात्रियों के लिए अन्नदान का विशेष आयोजन किया गया।

मूर्ति की जैन विरासत का पुनर्जीवन- प्राचीन 1008 श्री आदिनाथ जिन बिम्ब की जैन परंपरा को पुनर्जीवित करना 'अहिंसा वॉक' के लिए गर्व का विषय है। जैन समाज ने ग्रामवासियों और दानदाताओं का विशेष धन्यवाद किया, जिन्होंने राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे इस जिनालय को स्थान देने में सहयोग किया। उल्लेखनीय है कि अहिंसा वाक एक संगठन है। जो प्रतिमाह भ्रमण करके पुरानी धरोहरों की खोजबीन करते हैं यह उन्हीं की खोज का परिणाम है। दानवीर श्री एमके जैन चेन्नई में बताया कि यह मंदिर जैन समाज के लिए उल्लेखनीय उपलब्धि है जिसमें तमिलनाडु की जैन समाज ने मुक्त हस्त से सहयोग देकर इस मंदिर को निर्मित कराया है।

कार्यक्रम में दानवीर,दक्षिण के भामाशाह श्री एम.के. जैन, श्री दिनेश सेठी एवं तीर्थ क्षेत्र कमेटी के पदाधिकारीयो ने व सहयोगियों ने उपस्थिति दर्ज कराई व मंदिर निर्माण की सराहना करते हुए बड़ी धन राशि दान में दी। विशेष तौर पर श्री मुरुगन (चेंगलपट्टू), श्री शेखर (गुडुवांचेरी) और श्री एस. धनंजयन (पूनमल्ली) के सराहनीय योगदान का उल्लेख किया गया।

- अनुपमा राजेन्द्र जैन महावीर

डी.के.जैन को सेवानिवृत पर समारोह में ससम्मान दी विदाई
विशिष्ट कार्यों की सराहना से सभी हुए भावविभोर

इंदौर // रत्नेश जैन रागी बकस्वाहा //- नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, जल संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार में निरन्तर 35 बर्षो से सेवारत डी.के. जैन, प्रायवेट सचिव के पद से सेवानिवृत होने पर विभागीय अधिकारी कर्मचारियों तथा विशिष्ट महानुभावों की उपस्थिति में गरिमामय समारोह में सम्मान पूर्वक विदाई दी गई। इस समारोह में अधिकारियों व वक्ताओं ने श्री जैन के विशिष्ट अनुकरणीय/उल्लेखनीय कार्यो तथा उनके व्यक्तित्व कृतित्व को बताते हुए खुलें कण्ठ से साधुवाद सराहना करते हुए भावविभोर हो गये, सभी ने उनके सुखी स्वस्थ दीर्घायु की मंगलकामनाएं की। वहीं श्री जैन ने सभी विभागीय अधिकारी कर्मचारियों, सहयोगियों के अमूल्य सहयोग के प्रति धन्यवाद आभार ज्ञापित करते हुए जाने अनजाने में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष भूलों के लिए क्षमा याचना की।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के प्रचार प्रमुख राजेश जैन रागी बकस्वाहा ने श्री डीके जैन की सेवानिवृत्ति पर उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए बताया कि श्री जैन शासकीय सेवाकाल में भी समाजसेवा का दायित्व समर्पित होकर निरन्तर करते रहे, आप अनेक राष्ट्रीय संगठनों में जिम्मेदारी से सेवा के दायित्वों का निर्वहन करते हुए दिगम्बर जैन महासमिति के मंत्री , भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल (मप्र एवं छत्तीसगढ़) के अध्यक्ष, इन्दौर दिगम्बर जैन समाज,सामाजिक संसद, इन्दौर के महामंत्री, विजय नगर में स्थित औषधालय के प्रमुख सलाहकार , अनेकों ट्रस्टों के ट्रस्टी और पदाधिकारी सहित अनेकों पदों पर कुशलतापूर्वक कार्य करते आ रहे है। आप अनेकों अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय पंचकल्याणकों में मुख्य भूमिका निभाते आ रहे है ,साथ ही पुष्पगिरि पंचकल्याणक की कमान भी आपके नेतृत्व में रही और श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में आयोजित हुए वर्ष 2018 के महामस्तकाभिषेक के आप राष्ट्रीय सहसंयोजक बनाये गये जो इन्दौर समाज ही नहीं सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के लिये बडी उपलब्धि रही। आप कुशल संगठक एवं एक दवंग कार्यकर्ता के साथ साथ एक श्रेष्ठतम समन्वयक भी है और पूरे देश में आपने अपने कार्यों से पहचान बनाई है। भा दि जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के माध्यम से म.प्र. और छत्तीसगढ़ अंचल के तीर्थक्षेत्रों पर आप लगातार विकास कार्य करवा रहे है जैसे सोलर पावर पैनल लगवाना, संत निवास में सहयोग, बाटर कूलर लगवाना, त्यागीव्रतियों के लिए शुद्ध वस्त्र हेतु वाशिंग मशीनें पहुंचाने का कार्य लगातार कर रहे है। इन्दौर में घर घर से रद्दी पेपर उठावाकर अनुठी योजना से भी तीर्थक्षेत्रों के विकास में योगदान कर रहे है और यह योजना पूरे भारत की जैन समाज के लिए एक उदाहरण/अनुकरणीय बन गयी है। फरवरी 2026 में दशक के सबसे बडे अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक एवं वेदी प्रतिष्ठा महामहोत्सव णमोकार तीर्थ (महाराष्ट्र) में आयोजित होने वाले महामहोत्सव का उपाध्यक्ष मनोनीत कर महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का दायित्व सौंपा गया है । आपकी सेवानिवृत पर अनेक संस्था संगठनों तथा जनप्रतिनिधि समाजसेवियों तथा महानुभावों ने उज्वल भविष्य की शुभकामनायें देकर राष्ट्र धर्म तीर्थ समाज में निरन्तर उत्साह से कार्य करने की कामना की है।

इन्दौर संग्रहालय में पार्श्वनाथ की पुरातन प्रतिमाएँ

-डॉ. महेन्द्रकुमा जैन 'मनुज',

पार्श्वनाथ कायोत्सर्ग तृतीय, इन्दौर संग्रहालय

पार्श्वनाथ कायोत्सर्ग, इन्दौर संग्रहालय

इन्दौर, मध्यप्रदेश का राज्यकीय पुरातात्त्विक संग्रहालय इन्दौर बहुत समृद्ध है। यहाँ अन्य प्रतिमाओं के साथ-साथ जैन श्रमण संस्कृति से सम्बन्धित अनेकों प्रतिमाएँ संग्रहीत हैं, तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की भी प्रतिमाएँ हैं। उनमें से चार प्रमुख पार्श्व-प्रतिमाओं का परिचय यहाँ प्रस्तुत है।कायोत्सर्ग पार्श्वनाथ प्रतिमा प्रथम- इन्दौर संग्रहालय में संग्रहीत बलुआ पाषाण में तीर्थंकर पार्श्वनाथ की यह प्रतिमा कई स्थानों में भग्न होते हुए भी अपनी उत्कृष्टता का प्रतिभाष कराती है। पादपीठ भग्न है और वह आधार में छुपा हुआ है। चरणों के निकट से दोनों ओर चॅंवरधारी देव हैं। नीचे से धरणेन्द्र की सर्पकुण्डली बनते हुए शिर पर सप्तफणी शिरमुकुट उत्कीर्णित हैं। सर्पकुण्डली दोनों ओर से परिदृष्ट है। उदर और ग्रीवा में सुन्दर त्रिवली, वक्ष पर उष्णीष उत्कीर्णित है। मुखमण्डल भग्न है। त्रिछत्र भी यथास्थान है। दाहिनी ओर पार्श्व-प्रतिमा से कुछ छोटा एक चामरधारी देव है जो सम्भवतः संयुक्त रही और भी बड़ी प्रतिमा का चमरी देव है। यह गज के ऊपर खड़ा दर्शाया गया है। वितान में इसके ऊपर के स्थान में एक लघु पद्मासन जिन प्रतिमा है, उसके पार्श्व में माल्यधारी और उसके भी पीछे झांझ बजाता हुआ नर्तक है। इस पार्श्व-प्रतिमा के बायें ओर भी शिल्पन है, किन्तु भग्न है, मात्र एक ऋषि जैसी आकृति अवशिष्ट है।कायोत्सर्ग पार्श्वनाथ प्रतिमा द्वितीय- बलुआ पाषाण की इस प्रतिमा को पार्श्वप्रतिमा खण्ड कहा जाय तो भी अनुपयुक्त नहीं होगा, क्योंकि इसके साथ भी और प्रतिमा रही होगी जो खण्डित और अनुपलब्ध है। इस प्रतिमा के हाथ भग्न हैं, मुखमण्डल सुरक्षित है। शिर पर सात सर्प-फणों का फणाटोपन शिल्पित है, वक्ष पर उष्णीष चिह्न है, बाईं ओर के माल्यधारी का बहुभाग अवशिष्ट है, शेष परिकर भग्न व अप्राप्त है।कायोत्सर्ग पार्श्वनाथ प्रतिमा तृतीय- कमलासन पर समपादासन में कायोत्सर्गस्थ लाल बलुआ पाषाण खण्ड में निर्मित इस प्रतिमा के कमल के आधार पर दोनों ओर चवॅंर ढुराते एक-एक यक्ष शिल्पित है, दोनों हाथ भग्न हैं, बड़ी-बड़ी सर्पकुण्डलियाँ दोनों पार्श्वों में दृष्ट हैं मानों पीछे से कुण्डली आधार देते हुए ऊपर को गई हैं और सिर पर सप्त-

पार्श्वनाथ कायोत्सर्ग, इन्दौर संग्रहालय

पार्श्वनाथ पद्मासन तृतीय, इन्दौर संग्रहालय, प्राप्ति-भैरासा

फण-मुकुट बनाया हुआ है। स्कंधों के दोनों ओर एक-एक आकृति है, जिनके सिर पर तीन-तीन सर्प फण आच्छादित हैं। शेष परिकर भग्न है। इसके साथ लगी पट्टिका के अनुसार यह प्रतिमा हिंगलगढ़ (मन्दसौर) से प्राप्त हुई थी। इसका समय 11वीं शती ई. है।पद्मासन पार्श्वनाथ प्रतिमा चतुर्थ- बलुआ पाषाण की यह तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा भैरासा (देवास) से प्राप्त हुई है। सूचना पट्टिका में इसका समय 12वीं शती ईस्वी बताया गया है। इस प्रतिमा के घुटने और फणाटोपन भग्न है। दोनों पार्श्वों में तीन-तीन विशाल सर्पकुण्डलियाँ उत्कीर्णित हैं, जिससे यह पार्श्वनाथ प्रतिमा स्पष्ट है। वक्षस्थल पर सुन्दर श्रीवत्स और ग्रीवा पर त्रिवली टंकित है। कुंचित केश और स्कंधों पर लघु केश-लटिकाएँ हैं। कर्ण भी स्कंधों को स्पर्शित करते हुए शिल्पित हैं।

श्रद्धांजलि

परम तीर्थभक्त दानी श्रद्धेय श्री देवेन्द्र जी का देहपरिवर्तन

धनिक श्री देवेन्द्र कुमार जैन का अपने 96वें वर्ष में दिनांक 29-12-2015 को देहावसान का समाचार अत्यंत दुःखद एवं मर्माहत करने वाला है।शास्त्रों में कहा गया है— “जातस्य मरणं ध्रुवम्”, अर्थात जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है, किंतु जो अपना जीवन मानवता, धर्म और समाज की सेवा में समर्पित कर देते हैं, वे मृत्यु के पश्चात भी अपने सत्कर्मों के कारण अमर हो जाते हैं। स्व. देवेन्द्र कुमार जैन जी ऐसे ही पुण्यात्मा थे, जिनकी स्मृतियाँ समाज और जनमानस में सदा जीवित रहेंगी।उन्होंने अपने जीवनकाल में अनेकों सामाजिक एवं जनोपयोगी कार्यों द्वारा हजारों लोगों को लाभ पहुँचाया। अनेक परिवारों को रोजगार प्रदान कर वे उनके लिए आधार बने। देश में संकट की घड़ी में ऑक्सीजन उपलब्ध कराकर हजारों व्यक्तियों के जीवन की रक्षा करना उनके मानवीय दृष्टिकोण और करुणा का अनुपम उदाहरण है, जिससे असंख्य लोगों को जीवनदान प्राप्त हुआ।आपके परिवार द्वारा संचालित सिद्धोमन चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से देशभर के अनेक तीर्थस्थलों पर धर्मशालाएँ,

अतिथि भवन, अस्पताल आदि का निर्माण कराया गया। समाज सेवा के साथ-साथ जनकल्याणकारी योजनाओं में संपत्ति का सदुपयोग करना वास्तव में प्रशंसनीय है। आपने यह सिद्ध किया कि संपत्ति का श्रेष्ठ उपयोग धर्म, समाज और मानवता की सेवा में करना ही सच्चा पुण्य है।बाहुबली अस्पताल, अविका स्कूल, निवास भवन सहित अनेक निर्माण कार्यों में आपका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। आप लगभग 45 वर्षों तक कीर्ति भट्टारक महास्वामीजी के सान्निध्य में रहे—यह अपने आप में एक दुर्लभ और प्रेरणादायक तथ्य है। महामस्तकाभिषेक जैसे महान धार्मिक आयोजनों में आपकी सक्रिय सहभागिता और भावनात्मक जुड़ाव श्रद्धा का परिचायक रहा।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी दिवंगत पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है! समाज ऐसे पुण्यात्मा को सदा कृतज्ञता और श्रद्धा के साथ स्मरण करता रहेगा।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों के लिए मार्गदर्शन

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः, सिद्धा कुर्युश्च, मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि, साधवो मम मंगलम्।।

महानुभावों! वर्तमान में दिगम्बर जैन समाज में कई एक पंथ हैं और अनेकों संस्थाएँ हैं। कई एक संस्थाएँ ऐसी भी हैं जो अपने आप को अखिल भारतीय मानती हैं परन्तु उनके कार्यकलाप सीमित हैं। भारत में एक जैन संस्था है – दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी। तीर्थक्षेत्र कमेटी का अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों का कुछ अलग ही दायित्व है क्योंकि भारतवर्ष में जितने भी दिगम्बर जैन तीर्थ हैं, अथवा यों कहिए कि जितने भी जैनतीर्थ हैं, उनका संरक्षण, उनका संवर्धन, उनका विकास, यह तीर्थक्षेत्र कमेटी का अपना एक दायित्व है, कर्तव्य है, इसीलिए पदाधिकारी कैसे हों? इस पर कई बार चिंतन चलता है। विचार करके देखा जाए तो आज हमारे शाश्वत तीर्थ एवं अनेकों ऐसे प्रमुख–प्रमुख तीर्थ हैं, जिन पर दिगम्बर जैन समाज के हाथ में कुछ भी अधिकार नहीं है, प्रायः पूजा करने का एवं दर्शन का ही मात्र अधिकार है। कुछ तीर्थ ऐसे हैं जहाँ पर कोर्ट केस के निमित्त से पूजा एवं दर्शन से भी वंचित रहना पड़ता है, जैसे –शिरपुर पार्श्वनाथ आदि।

कुछ तीर्थ ऐसे भी हैं जहाँ हिन्दू महंतों ने कब्जे कर लिए हैं जैसे गिरनार सिद्धक्षेत्र आदि। यद्यपि मैं यह नहीं कह सकती हूँ कि तीर्थक्षेत्र कमेटी सजग नहीं है, सावधान नहीं है। अपने–अपने कर्तव्य का पालन उसके पदाधिकारी आदि करते ही रहे हैं फिर भी जहाँ तक मैं समझती हूँ कि वर्तमान में दिगम्बर जैन परम्परा में १८०० से अधिक दिगम्बर जैन साधु–साध्वियों में अनेकों आचार्य, उपाध्याय, मुनि,गणिनी, आर्यिकाएँ आदि साधुओं में से प्रसिद्धि को प्राप्त तथा आगम के ज्ञान में भी विशेष निष्पन्न देखे जाते हैं। मैंने अनुभव किया है कि जब भगवान महावीर स्वामी का २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव मनाया गया, जिसमें सरकारी कमेटी बनी, इन्दिरा जी अध्यक्ष बनीं और अपने जैन समाज की कमेटी में भी चारों जैन सम्प्रदायों द्वारा मिलकर बड़े–बड़े कार्यक्रम सम्पन्न किए गए, मैं स्वयं अनेकों मीटिंगों में उपस्थित रही हूँ, देखा है, अनुभव किया है कि उनमें साधुओं के मार्गदर्शन की, उनकी आज्ञापालन की प्रमुखता रही थी।

’ पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी द्वारा कुछ वर्ष पूर्व लिखित यह आलेख आज भी प्रासंगिक है।
अतः सम्पदित रूप में प्रस्तुत है।
’’ सम्प्रति अयोध्या दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र पर साधनारत।

सन् २००१ में भगवान महावीर स्वामी के २६०० वें जन्मकल्याणक महोत्सव में साधुओं को गौण रखा गया तो हमारी दिगम्बर जैन समाज को जो कटु अनुभव आया वह सबको ज्ञात है।

मैं तो अपने अनुभव के आधार से यह कहती हूँ कि जो हमारे तीर्थ हैं, उनके बारे में वर्तमान में अनेकों तीर्थों पर अपनी दिगम्बर जैन समाज में ही विवाद चल रहे हैं, विसंवाद चल रहे हैं। उदाहरण के लिए –पावा और पावापुरी। भगवान महावीर २५०० वें निर्वाण महोत्सव के समय में भी जब दिल्ली में आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज एवं आचार्य

श्री धर्मसागर जी महाराज विद्यमान थे तथा लगभग ६२ साधु–मुनि–आर्यिका–क्षुल्लक–क्षुल्लिका आदि सब थे, उनमें से किन्हीं का विशेष रूप में प्रस्ताव था कि गोरखपुर के पास सठियावाँ गाँव के निकट कोई पावा है, वह मध्यमा पावा के नाम से भगवान महावीर की निर्वाणभूमि है और इस पर कतिपय प्रस्ताव भी पारित हुए, पुस्तकों में भी छपा है तथा साहू शांतिप्रसाद जी ने उसे अनुदान भी दिया, उसे निर्वाणभूमि घोषित करने का प्रयास भी किया गया परन्तु आचार्यश्री देशभूषण जी महाराज एवं आचार्यश्री धर्मसागर जी महाराज ने उसे कतई स्वीकार नहीं किया तथा बिहार प्रान्त के नालंदा जिले में जो पावापुर नगरी है, जहाँ जलमंदिर में प्रतिवर्ष निर्वाणलाडू चढ़ाया जाता है, उसे ही निर्वाणभूमि माना और मानने का आदेश दिया। वर्तमान में मैं देख रही हूँ कि हमारे समाज के कुछ लोग ऐसे हैं, जो अपने को सर्वोपरि मान रहे हैं वे पावा को ही निर्वाणभूमि मान रहे हैं और वहीं जाकर निर्वाणलाडू चढ़ाते हैं तो क्या पावापुरी को छोड़ दिया जाए? यह एक विचारणीय विषय है। ऐसे ही अहिच्छत्र और बिजौलिया के बारे में भी है।

अहिच्छत्र को आज अनेक साधु एवं अनेक श्रावकगण भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान भूमि मानते हैं, उनकी उपसर्ग विजयभूमि मानते हैं कुछ लोग बिजौलिया को मानते हैं, इसे कुछ साधु भी मानने लगे हैं। कुण्डलपुर और वैशाली का भी यही झगड़ा है। सदियों से चले आये कुण्डलपुर को प्राचीन परम्परा के अनुसार ९९ प्रतिशत लोग भगवान महावीर जन्मभूमि मानते आ रहे हैं, कुछ वर्षों से कुछ शोधपूर्ण विद्वान तत्कालीन राष्ट्रपति जी से वहाँ स्मारक का शिलान्यास कराकर उसे भगवान महावीर की जन्मभूमि अर्थात् कल्याणकभूमि मानने लगे हैं, श्वेताम्बर लोग लिछवाड़ को जन्मभूमि मानते हैं ऐसे ही कोई भद्दिलपुर –इटखोरी और कोई विदिशा (म.प्र.) में भगवान शीतलनाथ जी की

जन्मभूमि मानते हैं। ऐसे अनेक विवाद उपस्थित हो गये हैं। इस पर मेरा तो यही कहना है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष और मंत्री आदि पदाधिकारीगण कैसे हों? उनका कर्तव्य किसी एक के लिए निर्णय देना उचित नहीं है। यहाँ तक कि शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर, जिसे कि दिगम्बर जैन समाज एवं श्वेताम्बर जैन समाज सभी एक स्वर से तीर्थंकर भगवन्तों की निर्वाणभूमि स्वीकार कर रहे हैं, वहीं कुछ शोधकर्ता विद्वान कोल्हुआ पहाड़ अथवा पुरलिया के पास के कोई पहाड़ को भगवान की निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं, जो कि सर्वथा अमान्य है।

उनका कर्तव्य है कि स्पष्ट दर्पण के समान हर चीज को समाज के बीच में स्पष्ट कर दें कि कितने वर्षों से, कहाँ से, कौन सा तीर्थ किस रूप में माना जा रहा है? तेरहपंथ–बीसपंथ की कहाँ क्या परम्परा है? कहाँ तारणपंथ है? कहाँ सोनगढ़ पंथ है? कब से ये पंथ चल रहे हैं? जैसा कि पं. बनारसी दास जी ने अपने कथानक में यह स्पष्ट लिखा है कि लगभग ४०० वर्ष पूर्व बीसपंथ से तेरहपंथ निकला है, जो भी हो। दिगम्बर जैन समाज में वर्तमान में ४ पंथ प्रसिद्ध हैं — तेरहपंथ, बीसपंथ, तारणपंथ और सोनगढ़ पंथ। कबसे, किस तीर्थ पर कौन सी परम्परा चली आ रही है आदि के विषय में तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों को इन सब विवादों में न उलझ करके जहाँ जो परम्परा जिस रूप में है, उसको कायम रखने का प्रयास करना चाहिए और कोई नई परम्परा किसी तीर्थ पर गढ़ने का, प्रयास नहीं करना चाहिए। न किसी तीर्थ को छेड़ना चाहिए, न उसे बदलना चाहिए अन्यथा निर्वाणभूमि पावापुरी तो श्वेताम्बरों के हाथ में है ही, अपना जो अधिकार पूजा–पाठ करने का, लाडू चढ़ाने का है, वह भी खत्म हो जायेगा। कुण्डलपुर न जाने कितनी सदियों से चला आ रहा दिगम्बर–श्वेताम्बर का सम्मिलित मंदिर था, उसके बाद आपस के विवाद से दिगम्बर मंदिर अलग बनाया गया, ऐसा ही राजगृही में हुआ है, ऐसा ही बनारस में हुआ है और ऐसा ही सारनाथ में हुआ। जैसा कि मुझे बताया गया कि चंद्रपुरी, बनारस आदि सभी जगहों में जो प्राचीन मंदिर थे वे दिगम्बर–श्वेताम्बर के सम्मिलित रहे हैं पुन: श्वेताम्बरियों से जब दिगम्बर जैन समाज किसी विषय पर सामंजस्य नहीं बैठा पाई तो दोनों ने अपने–अपने मंदिर अलग–अलग बना लिए।

मेरी समझ में तो यह पूर्णतया स्पष्ट कर देना चाहिए कि कितने साधु, कितने नेतागण, कितनी समाज, किस तीर्थ को, कितने समय से मानती आ रही है और कब किस तीर्थ का अस्तित्व सामने आया? अभी नए–नए कई एक तीर्थ भी प्रसिद्धि में आ रहे हैं। बात यही है कि प्रत्येक तीर्थों का जो जैसा इतिहास है, उसका ज्यों कि त्यों सुरक्षित रखते हुए उसके समर्थन में पदाधिकारियों को विचार–विमर्श करके निर्णय लेना चाहिए और सभी प्रसिद्ध आचार्य–आर्यिकाओं साधुओं से मार्गदर्शन अवश्य लेना चाहिए, उनकी मान्यता को भी बरकरार रखना चाहिए अर्थात् किसी एक साधु से या एक पंथ से बंधकर क्षेत्र के पदाधिकारियों को नहीं रहना चाहिए। एक प्रश्न बार–बार सामने आ रहा है कि कौन किस साधु को मानता है? देखा जाए तो वर्तमान में जितने भी पिच्छीधारी साधु हैं, आप सब का नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि पिच्छी–कमण्डलुधारी को नमस्कार करना, उनको आहार देना। कौन साधु तेरहपंथ के हैं? कौन बीसपंथ के हैं? कौन किस विचारधारा से प्रभावित हैं? कोई सोनगढ़ विचारधारा के हैं, कोई तारणपंथ से प्रभावित हैं, तो किसी एक पंथ से या एक साधु से यदि तीर्थक्षेत्र कमेटी का अध्यक्ष बंधता है तो यह उसका नैतिक कर्तव्य नहीं है।

विचार करके देखा जाये तो मदभेद तो होते रहते हैं। ग्रंथों के अध्ययन से मैंने जो अनुभव किया हैं किन्हीं आचार्यों के सामने दो मत आए तो उन्होंने बहुत स्पष्ट कह दिया कि मैं इस विषय में कुछ भी निर्णय नहीं दे सकता, केवली–श्रुतकेवली से पूछना चाहिए। उदाहरण– श्री यतिवृषभाचार्य प्रथम गुणस्थान में दश एवं द्वितीय गुणस्थान में चार प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति मानते हैं एवं श्री भूतबलि आचार्य प्रथम गुणस्थान में पाँच एवं द्वितीय में नव प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति मानते हैं ऐसी स्थिति में श्री नेमिचन्द्राचार्य ने दोनों मत गोम्मटसार कर्मकांड में दे दिये हैं। केवली–श्रुतकेवली होंगे तभी कोई निर्णय होगा, तब तक हमें क्या करना चाहिए? तो आचार्य कहते हैं कि तक तक हमें दोनों मतों पर श्रद्धान करना चाहिए। जब इतने बड़े–बड़े आचार्यों ने इस प्रकार का निर्णय दिया है तो वर्तमान में किसी तीर्थ के विषय में मतभेद हो जाने पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारियों को एक विषय में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। सबको साथ लेकर चलना चाहिए।

हमारी दिगम्बर जैन समाज वैसे ही अल्पमात्रा में है पुन: उसमें आज भी अनेक पंथभेदों एवं वर्गभेदों में बंट चुकी है। आज अपने आपको सर्वोदय सिद्धान्तों का प्रतिपादक कहने वाले भी कुछ लोग समाज में वर्गोदय को स्थापित कर रहे हैं।

आज से २५ वर्ष पूर्व मैंने देखा था कि जितने भी समाज के नेतागण थे, वे सभी सारे साधुओं को मानते थे।

अजमेर में हमारे दो चातुर्मास हुए–एक आचार्यश्री शिवसागर जी महाराज के साथ (सन् १९७१ में), वहाँ सरसेठ भागचंद जी सोनी थे, वे बड़े अच्छे शब्दों में कहा करते थे कि अन्नदाता! हमारे तेरहपंथियों के कोई अलग से साधु तो हैं नहीं, हम तो आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा से आप लोगों को ही मानते आए हैं। आचार्यश्री शांतिसागर जी (दक्षिण) की परम्परा में बीसपंथ चला आ रहा हैं। भले ही आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी की परम्परा में तेरहपंथ चला आ रहा है, फिर भी सभी साधुओं को मानने वाले सब श्रावक थे। वर्तमान में बहुत वर्गभेद हो रहा है, एक आचार्य को मानने वाले ग्रुप के लोग दूसरे साधु को नमस्कार नहीं करना चाहते हैं। आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज (दक्षिण) और आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज (छाणी) दोनों का चातुर्मास एक साथ ब्यावर में हुआ। आन्तरिक मतभेद होते हुए भी बाहर में बहुत सामंजस्य रहा। जैसा कि जब सन् १९५८ में आचार्य श्री शिवसागर जी के संघ के ब्यावर के चातुर्मास में रानीवाला परिवार ने मुझे बताया और चारित्रचक्रवर्ती आदि पुस्तकों में भी इसका उल्लेख है। वर्तमान में जो वर्गभेद पड़ रहा है इसमें मात्र श्रावक ही कारण नहीं हैं, साधु भी कारण हैं फिर भी तीर्थक्षेत्र कमेटी का अध्यक्ष इन प्रपंचों में न उलझे। उसमें तो ऐसा ही व्यक्तित्व होना चाहिए जो सभी साधुओं की नीतियों को, उनके विचारों को साथ लेकर चले, चाहे वह तेरहपंथ हो अथवा बीसपंथ। सब तीर्थों को तथा सब साधुओं को लेकर चलने वाला व्यक्ति ही समाज में तीर्थों का संरक्षण कर सकता है और धर्मप्रभावना के कार्यों में तीर्थों के विकास में तथा तीर्थंकरों के प्रभावक कार्यक्रमों में अच्छी तरह से भाग लेने का अधिकारी है। संकुचित

विचारधारा वाले किसी एक साधु से बंधकर/बंटकर या उसी ग्रुप में तन्मय होकर दूसरों को अपमानित करने वाले कभी भी तीर्थक्षेत्र कमेटी जैसी महान संस्था द्वारा तीर्थ के संरक्षण में अपना अमूल्य योगदान नहीं कर सकते। क्योंकि पूरी जैन समाज जब एकजुट होकर तीर्थों के संरक्षण में योगदान देती है तभी उनका संरक्षण होता है। सम्मेदशिखर जैसे तीर्थों के संरक्षण में, कोर्टकेस आदि में पूरी दिगम्बर जैन समाज अगर अपने द्रव्य का सदुपयोग न करे तो काम कैसे हो सकता है? तो इसलिए जहाँ तक मैं समझती हूँ कि जो प्रश्न उठाए जाते हैं कि तुम अमुक साधु को मानते हो? साधुओं में इस प्रकार से भेद करना कहाँ तक उचित है? आगम की पंक्ति तो यही कि—

भुक्तिमात्र प्रदाने तु, का परीक्षा तपस्विनाम्।
ते सन्त: सन्तवसन्तो वा, गृही दानेन शुद्ध्यति।।

अर्थात् एक मुट्ठी मात्र अन्न देने के लिए साधुओं की क्या परीक्षा करना? वे सन्त हों अथवा असन्त, गृहस्थ तो दान देकर शुद्ध हो जाता है।

पं. आशाधर जी ने भी सागारधर्ममृत में कहा है—

विनयस्यैदंगीनेषु प्रतिमासु जिनानिव।
भक्त्या पूर्वमुनीनर्चेत कुत: श्रेयेऽति चर्चिनाम्।।

अर्थात् वर्तमानकालीन साधुओं में पूर्वकालीन साधुओं की स्थापना करके, उनकी पूजा—भक्ति एवं अर्चना करें। जैसे कि प्रतिमाओं में जिनेन्द्र भगवान की स्थापना करके आप उनको पूजते हैं। जो अति चर्चा करने वाले हैं, क्षोद—क्षेम करने वाले हैं, उनका कल्याण कैसे हो सकता है? ऐसा भी देखा जाता है कि निर्दोष को भी आरोप लगा देते हैं तथा जो सदोष हैं उनको मान्यता दे देते हैं, उनको सिर चढ़ा लेते हैं।

वर्तमान में परीक्षा की कोई कसौटी नहीं है। जिस प्रकार कोई सड़क चलता व्यक्ति एम.ए.पी—एच.डी. वालों की परीक्षा नहीं ले सकता है, अपितु उनके परीक्षक तो अलग होते हैं, उसी प्रकार हर व्यक्ति जो आज परीक्षक बन बैठा है, इसलिए समाज में अतीव हानि होती चली जा रही है। कहने का तात्पर्य यही है कि तीर्थक्षेत्र कमेटी के पदाधिकारीगण विशेष प्रसिद्धि को प्राप्त सभीआचार्य—उपाध्याय—साधु—गणिनी—आर्यिका आदि को साथ लेकर चलते हुए तीर्थों का संरक्षण एवं विकास करें, वे पंथभेद—जातिभेद—सम्प्रदाय—मतभेद आदि में न उलझ कर सारे तीर्थों का संरक्षण करे, उनका विकास करे। विशेषकर यह इतिहास दर्पण के समान स्पष्ट करे कि कब से कौन सा तीर्थ किस रूप में प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है और कब कौन सा तीर्थ नया बनाया गया है?

उदाहरण के लिए जैसे प्रयाग तीर्थ है। प्रयाग को वर्तमान में जैन तीर्थ नहीं माना जा रहा था जब मैंने पद्मपुराण में पढ़ा कि ''प्रकृष्टो वा कृतस्त्याग: प्रयागस्तेन कीर्तित:'' तथा हरिवंशपुराण आदि अनेक शास्त्र देखे कि जहाँ पर भगवान ने प्रकृष्ट त्याग करके जैनेश्वरी दीक्षा धारण की, उसी का नाम प्रयाग हो गया, जब मैंने चर्चा उठाई तो मालूम पड़ा कि वटवृक्ष जो वहाँ है वहीं भगवान ऋषभदेव को दिव्य केवलज्ञान प्राप्त हुआ, तब मैंने यही कहा कि यह वही परम्परागत अक्षयवट वृक्ष है जिसके नीचे भगवान ने जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की थी तथा दिव्य केवलज्ञान प्राप्त किया था। इसलिए उसको सन् २००० में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान ने जमीन का क्रय करके ''तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली'' के नाम से भगवान की दीक्षाभूमि एवं केवलज्ञानभूमि रूप से तीर्थ बनाया, तो इस प्रकार जिस तीर्थ का जो इतिहास हो, वह वहाँ लिखा जाना चाहिए। अहिच्छत्र का इतिहास, बिजौलिया का इतिहास आदि और उन—उनकी मान्यता के अनुसार तीर्थक्षेत्र कमेटी को उसमें किसी को बदलना नहीं चाहिए, किसी प्रकार से किसी तीर्थ को मद्देनजर उपेक्षित नहीं करना चाहिए।

इसलिए मेरी तो यही प्रेरणा है कि समाज के लोग इन पर चिन्तन करें, विचार करें और तीर्थक्षेत्र कमेटी के साथ जुड़कर अपने सभी तीर्थों का संरक्षण करें। किसी प्रकार से वर्गभेद और जातिभेद—मतभेद समाज में न बढ़ने पायें, न पनपनें पायें, सबको साथ लेकर चलें, तभी तीर्थों के संरक्षण, संवर्धन होंगे। क्योंकि सभी जैन तीर्थ जैन समाज के सर्वस्व हैं, प्राण हैं ऐसा दृढ़ विश्वास होना चाहिए।

खुदाई में मिला 207 वर्ष पुराना सिक्का

डोंगरगढ़ की इस पावन धरा ने फिर से एक बार अपना इतिहास दोहराया फिर से इस धरती ने हम जैनो के अस्तित्व की कहानी में एक और पन्ना जोड़ा। लगातार रेलवे लाईन की खुदाई में हमे जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां मिलती रही है। उसी क्रम में एक बार और दो सो वर्ष पुराना सिक्का प्राप्त हुआ जिसमे २३वे तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ जी की आकृति बनी हुई है। भाई कपिल जनबंधु ने ये सिक्का देख और भगवान पार्श्वनाथ की आकृति देख कर समझ गए कि ये धरोहर जैन संप्रदाय की है और सम्मान पूर्वक जैन समाज को सुपुर्द कर दिया।

आचार्य श्री कुंदकुंदाचार्य की जन्म स्थली

कोनाकोंडला के जीर्णोद्धार के लिये एक और कदम

जैन दर्शन के महान आचार्य, 84 पाहुड़ के रचयिता तथा विदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी के समवशरण में गमन करने वाले आचार्य कुंदकुंद स्वामी की जन्मस्थली के संरक्षण को लेकर एक महत्वपूर्ण आशा जगी है। जैन संस्कृति को सतत प्रवाहित करने में अतुलनीय योगदान देने वाली इस ऐतिहासिक भूमि की दुर्दशा को रोक पाना वर्तमान परिस्थितियों में कठिन होता जा रहा था, किंतु भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सतत प्रयासों और आचार्य श्री गुणधरनंदी जी के पूर्ण सहयोग के आश्वासन से अब नई उम्मीद दिखाई दे रही है।

आचार्य कुंदकुंद की जन्मस्थली वर्तमान आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले के समीप स्थित कोंडकुंदु क्षेत्र में मानी जाती है, जिसे प्राचीन काल में कौंडकुंदपुर कहा जाता था। आज यह स्थान कोनाकोंडला के नाम से जाना जाता है। यहां से अनेक प्राचीन शिलालेख भी प्राप्त हुए हैं, जो इसकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता को पुष्ट करते हैं।

ईसा पूर्व दूसरी–प्रथम शताब्दी (लगभग ई.पू. 127–172) में जन्मे आचार्य कुंदकुंद स्वामी ने मात्र 11 वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण की थी। उन्होंने 84 पाहुड़ की रचना की, जिनमें से अधिकांश ग्रंथ आज उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान में उपलब्ध उनके प्रमुख ग्रंथों में **मूलाचार, प्रवचनसार, समयसार, नियमसार, पंचास्तिकाय, अष्टपाहुड़, रयणसार, बारा अणुवेक्खा, दस भक्ति तथा कुरलकाव्य** प्रमुख हैं।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन के नेतृत्व में, कमेटी के 125 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर चेयरमैन श्री जवाहरलाल जैन एवं चैनल महालक्ष्मी की टीम कुछ समय पूर्व आचार्य श्री गुणधरनंदी जी से वरूर में भेंट करने पहुँची। इस दौरान जन्मस्थली के जीर्णोद्धार को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। लगभग 20 हजार श्रद्धालुओं की उपस्थिति में आचार्य श्री गुणधरनंदी जी ने सार्वजनिक मंच से इस क्षेत्र के जीर्णोद्धार में पूर्ण सहयोग देने की घोषणा की तथा इसे एक महत्वपूर्ण तीर्थ के रूप में विकसित करने का आश्वासन दिया।

वर्तमान में यह क्षेत्र वन विभाग के अधिकार क्षेत्र में है और चारों ओर से खुला पड़ा है। यहां न तो बाउंड्रीवाल है और न ही पानी की कोई स्थायी व्यवस्था; लगभग आधा किलोमीटर दूर से पानी लाना पड़ता है। स्थानीय लोग इस स्थान को **"रसासिद्धुला गुट्टा"** कहते हैं—जिसमें *गुट्टा* का अर्थ पहाड़ी और *सिद्धुला* का अर्थ सिद्धगिरि है। प्रत्येक अमावस्या को यहां स्थानीय लोग फूल चढ़ाने आते हैं। पुरातत्व विभाग के अभिलेखों में भी यह स्थल इसी नाम से दर्ज है।

यह क्षेत्र तीर्थक्षेत्र कमेटी के तमिलनाडु अंचल के अंतर्गत आता है। इसकी देखरेख के लिए कमेटी द्वारा वर्षों से नियुक्त श्री सुरेश जैन ने बताया कि यह भूमि सर्वे संख्या **377/एन** के अंतर्गत सरकारी अभिलेखों में दर्ज है। आसपास खनन गतिविधियाँ चल रही हैं,

हालांकि पत्थर बाहर से लाकर तोड़े जाते हैं। कुल 2.6 एकड़ भूमि पर प्रशासनिक स्तर पर सर्वेक्षण किया गया है।

अनंतपुरम के संयुक्त कलेक्टर श्री शिव नारायण शर्मा, गुंतकाल राजस्व मंडल अधिकारी श्री ए.बी.वी.एस. श्रीनिवास, वज्रकारूर तहसीलदार श्री एम. नरेश कुमार तथा ग्राम राजस्व अधिकारी श्री छथारा नायक सहित अन्य अधिकारियों ने स्थल का निरीक्षण किया। इसके पश्चात आश्वासन दिया गया कि शीघ्र ही यह भूमि वन विभाग से पुरातत्व विभाग को हस्तांतरित की जाएगी, जिसके बाद तीर्थक्षेत्र कमेटी को स्थानांतरण की प्रक्रिया प्रारंभ होगी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बू प्रसाद जैन ने बताया कि भूमि के आधिकारिक दस्तावेज प्राप्त होते ही सबसे पहले बाउंड्रीवाल एवं दो-तीन कमरों का निर्माण कार्य प्रारंभ किया जाएगा। आशा है कि **वर्ष 2026 की शुरुआत इस ऐतिहासिक क्षेत्र के जीर्णोद्धार के लिए एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज होगी।** ★★★★

आईएएस सुरेश जैन कृत ग्रंथ'नैनागिरी जैन तीर्थ : पुरातन से अद्यतन' का मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा विमोचन

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में खजुराहो के समीप स्थित प्राचीन एवं ऐतिहासिक नैनागिरी जैन तीर्थ के पुरातात्विक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व को उजागर करने वाले ग्रंथ 'नैनागिरी जैन तीर्थ : पुरातन से अद्यतन' का विमोचन हाल ही में प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ।

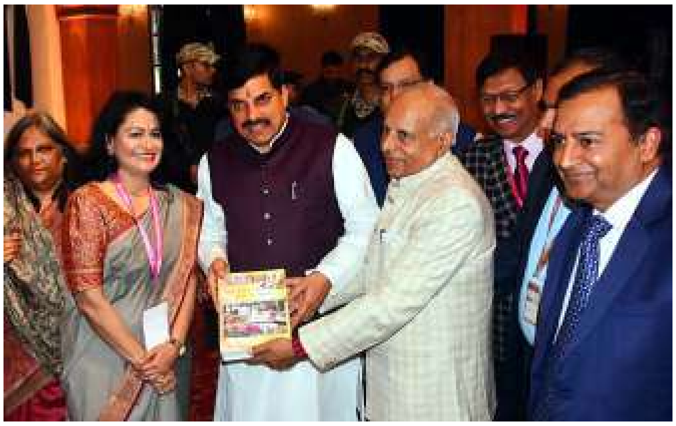

यह महत्त्वपूर्ण ग्रंथ भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्री सुरेश जैन (आईएएस) एवं न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन (भोपाल) द्वारा संयुक्त रूप से रचित है। ग्रंथ विमोचन अवसर पर पुरातत्व आयुक्त श्रीमती उर्मिला शुक्ला तथा उपसचिव श्री राजेश गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इस अवसर पर जैन समाज, तीर्थ संरक्षण, पुरातत्व एवं सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण से जुड़े विषयों पर सार्थक एवं विचारोत्तेजक चर्चा भी हुई।

उल्लेखनीय है कि नैनागिरी जैन तीर्थ, छतरपुर जिले की एक अमूल्य धरोहर है, जिसका इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं गौरवशाली रहा है। विदित हो कि श्री सुरेश जैन के विदिशा कलेक्टर पदस्थापना काल में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण एवं राज्य पुरातत्व विभाग के सहयोग से विदिशा स्थित ईदगाह (बीजा मंडल) क्षेत्र में 2500 से अधिक प्राचीन प्रतिमाओं का उत्खनन, संरक्षण एवं दस्तावेजीकरण का कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया गया था।

प्रस्तुत ग्रंथ में न केवल नैनागिरी जैन तीर्थ के प्राचीन इतिहास का तथ्यात्मक विवरण दिया गया है, बल्कि उसकी वर्तमान स्थिति, संरक्षण प्रयासों एवं भविष्य की संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। यह कृति शोधार्थियों, इतिहासकारों, जैन समाज एवं सांस्कृतिक धरोहरों में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ सिद्ध होगी।

- राजेन्द्र जैन महावीर

प्रो. पीटर फ्लूगेल का व्याख्यान

जैन साहित्य एवं इतिहास के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान प्रो. पीटर फ्लूगेल का देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर के भारतीय ज्ञान परम्परा –जैन गणित केन्द्र में 'विशाल जैन साहित्य में मापें एवं अनन्त' [Magnitute and Infinity: The Riddle of Jain Gigantomania] विषय पर रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक व्याख्यान १२ दिसम्बर २०२५ हुआ। लंदन विश्वविद्यालय, लंदन में सेंटर फॉर जैन स्टडीज के संस्थापक एवं अध्यक्ष प्रो. पीटर ने कहा कि जैन साहित्य में अनन्त एवं विशाल संख्याओं का प्रयोग जहाँ विस्मयकारी है वही स्थापत्य में विशाल कायोत्सर्ग प्रतिमाओं का निर्माण हम सबका ध्यान आकृष्ट करता है। देश के अनेक तीर्थों पर स्थापित भगवान शांतिनाथ की विशाल प्रतिमायें, शांति–कुंथु एवं अरनाथ की त्रितीर्थी, विशाल कायोत्सर्ग प्रतिमाओं की श्रखृंला में साम्य एवं परस्पर क्रमबद्धता शोधकों को आकर्षित करती है। आपने कहा कि सर्वत्र भ. शांतिनाथ की प्रतिमाऐं बड़ी तथा भगवान महावीर की अपेक्षाकृत बहुत छोटी है। क्यों?

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. राकेश सिंघई ने उनका विश्वविद्यालय में स्वागत किया एवं कहा कि जैन गणित केन्द्र के प्रमुख प्रो. अनुपम जैन के प्रयासों से आपका इस विश्वविद्यालय में आगमन हुआ है। जैन ग्रंथों में केवल अनन्त का ही उल्लेख नहीं है अपितु अनन्तों के प्रकारों की भी चर्चा की है जो उनका वैशिष्ठ्य है। बाइनरी सिस्टम को लोग विदेशी मानते हैं जबकि भारत में यह हजारों वर्षों से प्रचलित है। भारत में छंदशास्त्र में इसका व्यापक प्रयोग है। प्रो. अनुपम जैन द्वारा इस केन्द्र पर तैयार किये गये एवं भारत सरकार द्वारा प्रकाशित 'जैन गणित' ग्रंथ में अनन्तों के वर्गीकरण एवं परस्पर संबंधों की विस्तार से चर्चा की है। आपने इसकी एक प्रति प्रो. पीटर को समर्पित की। आपने प्रो. फ्लूगेल द्वारा उठाये गये प्रश्नों का भी समाधान प्रस्तुत किया। प्रत्युत्तर में प्रो. पीटर द्वारा लंदन विश्वविद्यालय के जैन सेंटर द्वारा प्रकाशित Pure Soul ,oa News letter of Jain Studies के २०वें अंक की प्रति प्रो. अनुपम जैन को भेंट की।

प्रो. अनुपम जैन ने २००४ से लंदन विश्वविद्यालय में चल रहे जैन अध्ययन केन्द्र की गतिविधियों विशेषत: प्रति वर्ष मार्च में आयोजित होने वाले Annual Lectures series (वार्षिक व्याख्यानमाला) तथा कार्यशाला की चर्चा की। आपने बताया कि २००७ एवं २०१६ में उन्हें व्यक्तिश: सम्मिलित होने एवं वार्षिक व्याख्यान (२०१६) देने का अवसर प्राप्त हुआ है। लंदन का केन्द्र जैन अध्ययन केन्द्रों हेतु आदर्श है। सम्पूर्ण विश्व से जैन विद्या के अध्येता विद्वान यहाँ प्रतिवर्ष एकत्र होते हैं। मुझे स्वयं अनेक जैन विद्या के विशेषज्ञों से यहाँ मिलने का अवसर मिला। व्याख्यान के अन्त में प्रो. फ्लूगेल ने केन्द्र पर संयोजित जैन गणितीय ग्रंथों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

125वें वर्ष की ओर बढ़ते हुए

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

यह गुल्लक नहीं, गुडलक है
संभाजी नगरः सबसे आगे, पहला नगर

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी, आचार्य श्री गुणधरनंदी जी की मंगल प्रेरणा व उनके साथ आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी, आचार्य श्री प्रणाम सागर जी, उपाध्याय श्री विरंजन सागर जी तथा गणिनी आर्यिका श्री सौभाग्यमति माता जी पावन उपस्थिति में

योग एवं संगीत अमृत महा-महोत्सव के दौरान छ. संभाजी नगर व आसपास के सभी 30 जिनालयों में सिद्धक्षेत्र, कल्याणक भूमियां, अतिशय क्षेत्रों के जीर्णोद्वार हेतु भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक योजना के लिए वहां के जैन पंचायत अध्यक्ष श्री महावीर पाटनी जी की अगुवाई में गुल्लक रखने की सहर्ष घोषणा की। इस प्रकार **छ. संभाजी नगर देश का पहला शहर बन गया जहां सभी जिनालयों में तीर्थ रक्षक गुल्लक रखी जा रही है।**

13.01.2026

जम्बू प्रसाद जैन	संतोष पेंढारी	जवाहर लाल जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	चेयरमैन (शतकोत्तर रजत वर्ष)

सान्निध्य एवं आशीर्वाद

कुंथुगिरि प्रणेता
प.पू.साधना सम्राट जगद् गुरु भारतगौरव
गणाधिपती गणधराचार्य
श्री १०८ कुंथुसागरजी गुरुदेव

णमोकार तीर्थ

अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव

दि.०६ फेब्रुवारी २०२६ ते २५ फेब्रुवारी २०२६

मुंबई-आगरा हाईवे नं ३, मु. पो. मालसाने-४२३१०१, ता. चांदवड, जिल्हा नाशिक (महाराष्ट्र)

प्रेरणा एवं प्रमुख निर्देशक

णमोकार तीर्थ प्रणेता
प.पू. प्रज्ञाश्रमण ज्ञानयोगी सारस्वताचार्य
देवनंदिजी गुरुदेव

**प्रमुख मार्गदर्शन
युगल मुनिराज**

श्री १०८ अमोघकीर्तिजी गुरुदेव

श्री १०८ अमरकीर्तिजी गुरुदेव

वैशाली दीदी
संघस्थ बालब्रम्हचारिणी
9404006108

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष
9822225911

नीलम अजमेरा
राष्ट्रीय संयोजक
9422070319

कमल ठोल्या
राष्ट्रीय महामंत्री
9841070589

दिनेश सेठी
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
7806949350

भूषण कासलीवाल
चेयरमैन प्रशासनिक कार्य
9850355555

जमनालाल हपावत
चेयरमैन कलश आवंटन समिति
9867668558

फूलचंद जैन
चेयरमैन त्यागिव्रती समिति
9422206711

प्रतिष्ठा में,

परम सम्मानीय महोदय/महोदया, सादर अभिवादन

सुप्रसिद्ध अध्यात्मवेत्ता एवं महान तपस्वी संत, संत-प्रवर प.पू. प्रज्ञाश्रमण सारस्वताचार्य श्री 108 देवनंदि जी गुरुदेव, जिनका जीवन में एक ओर कठोर तप का तेज है, वहीं दूसरी ओर करुणा, सहानुभूति एवं वात्सल्य की अविरल सरिता प्रवाहित होती है, के मंगल आशीर्वाद, आपके चतुर्दिक उत्कर्ष, उत्तम स्वास्थ्य एवं निर्मल आनंद की शुभाशंसाओं के साथ हम संप्रेषित कर रहे हैं|

आपको यह अभिज्ञात कर अतीव प्रसन्नता होगी कि मुंबई - आगरा महामार्ग क्र. 03, मु. पो. मालसाने, ता. चांदवड, जिल्हा - नाशिक पर तीस एकड के विशाल भूखंड में श्रध्दा-केन्द्रित शिक्षा और सेवा के साथ-साथ, रत्नत्रय साधना की प्रयोगधर्मी स्थली के रूप में उदित हुआ है; णमोकार तीर्थ, जो भारत की जैन विरासत का गरिमापूर्ण प्रस्तुतिकरण करता है| लगभग दो लाख वर्ग फुट में फैले भूभाग पर निर्मित इस महातीर्थ में विद्यमान हुआ है भव्यातिभव्य समवशरण मंदिर, जिसकी अवगाहना 108 फीट की है तथा जिसमें 27 फुट के परिकर के संग भगवान चंद्रप्रभु की अत्यंत मनोहारी प्रतिमा, 51 फुट की अरिहंत देव की प्रतिमा तथा चार अन्य परमेष्ठियों की 31 फुट अवगाहना की प्रतिमायें विराजमान की गयी हैं। इनके अतिरिक्त भगवान नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी एवं भगवान आदिनाथ, भरत, बाहुबली की इकतीस फिट खडगासन प्रतिमायें नवदेवताओं के नौ मंदिर, सहसकूट, चार स्तूप एवं नंदीश्वर जिनालय के बावन मंदिर, पंचमेरु के संग आविर्भूत हुए हैं। साथ ही श्रीक्षेत्र का प्रांगण 25,000 वर्गफिट के परमेष्ठी मंडप, एवं साधु संतो के लिये संत निवास सर्व सुविधायुक्त 200 कमरों की धर्मशाला, आहारकक्ष, भोजनशाला आदि सुविधाओं से सुसज्जित हुआ है।

परम आदरणीय, इस जनमंगलकारी महातीर्थ की भव्य पञ्च कल्याणक महाप्रतिष्ठा के माध्यम से पाषाण को पूज्य बनाने का अनुष्ठान 06 फरवरी से 13 फरवरी 2026 तक, पश्चात महामस्तकाभिषेक 25 फरवरी 2026 तक के कालखंड में आयोज्य है| उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में बहुत विनम्रता के साथ, हम आग्रहपूर्ण निवेदन करते हैं कि जैनेश्वरी तपश्चर्या के महानायक, परमपूज्य साधणा सम्राट गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं सान्निध्य में, उनके शिष्य-प्रवर, परम पूज्य प्रज्ञाश्रमण सर्वोदयी राष्ट्र संत सारस्वताचार्य श्री देवनंदि जी गुरुदेव के निर्देशन तथा उनके प्रखर-प्रभावी शिष्य; मुनिश्री अमोघकीर्ति जी एवं मुनिश्री अमरकीर्ति के मार्गदर्शन में समस्त मांगलिक कार्य संपन्न होंगे|

पूज्य देवनंदी जी गुरुदेव ने अपने आशीर्वाद के साथ, आपको इस महा-आयोजन में अपनी सहभागिता प्रदान करने का भाव संप्रेषित किया है| आपकी उपस्थिति मानवता के महामंगल का निमित्त बनेगी; ऐसा हम सभी का परम विश्वास है| अतएव, आपश्री से हम विनयपूर्वक निवेदन करते हैं कि कृपया अपने व्यस्त कार्यक्रमों में से समय निकाल कर, इस महा-आयोजन में पधारने की महती कृपा करें| आपके कृपापूर्ण उत्तर की हमें प्रतीक्षा रहेगी|

अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति, णमोकार तीर्थ (महाराष्ट्र)

संतोष जैन (पेंढारी)	नीलम अजमेरा	कमल ठोल्या
राष्ट्रीय अध्यक्ष (9822225911)	राष्ट्रीय संयोजक (9422070319)	राष्ट्रीय महामंत्री(9841070589)

Office: Jain Acid & Chemicals, 19/A, Central Avenue, Gandhi bagh, Nagpur - 440 0032 (Maharashtra)
Phone: 9822225911 Email: jainacid77@gmail.com

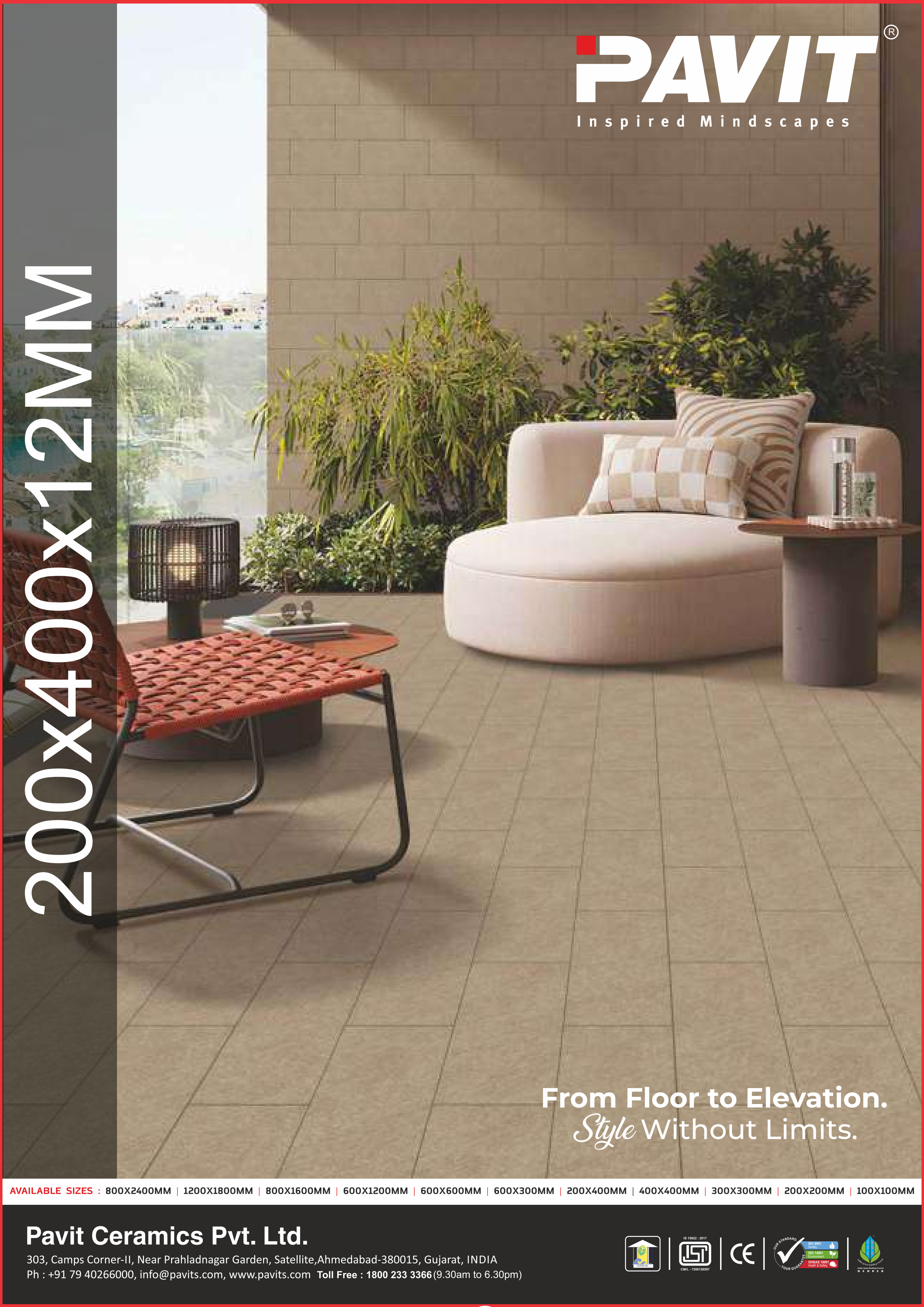
PAVIT®
Inspired Mindscapes
200x400x12MM
From Floor to Elevation.
Style Without Limits.
AVAILABLE SIZES : 800X2400MM | 1200X1800MM | 800X1600MM | 600X1200MM | 600X600MM | 600X300MM | 200X400MM | 400X400MM | 300X300MM | 200X200MM | 100X100MM
Pavit Ceramics Pvt. Ltd.
303, Camps Corner-II, Near Prahladnagar Garden, Satellite,Ahmedabad-380015, Gujarat, INDIA
Ph : +91 79 40266000, info@pavits.com, www.pavits.com Toll Free : 1800 233 3366 (9.30am to 6.30pm)
IS 15622 : 2017
CM/L - 7200126597
ISO 9001 Quality
ISO 14001 Environment
OHSAS 18001 Health & Safety

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi January 2026
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.